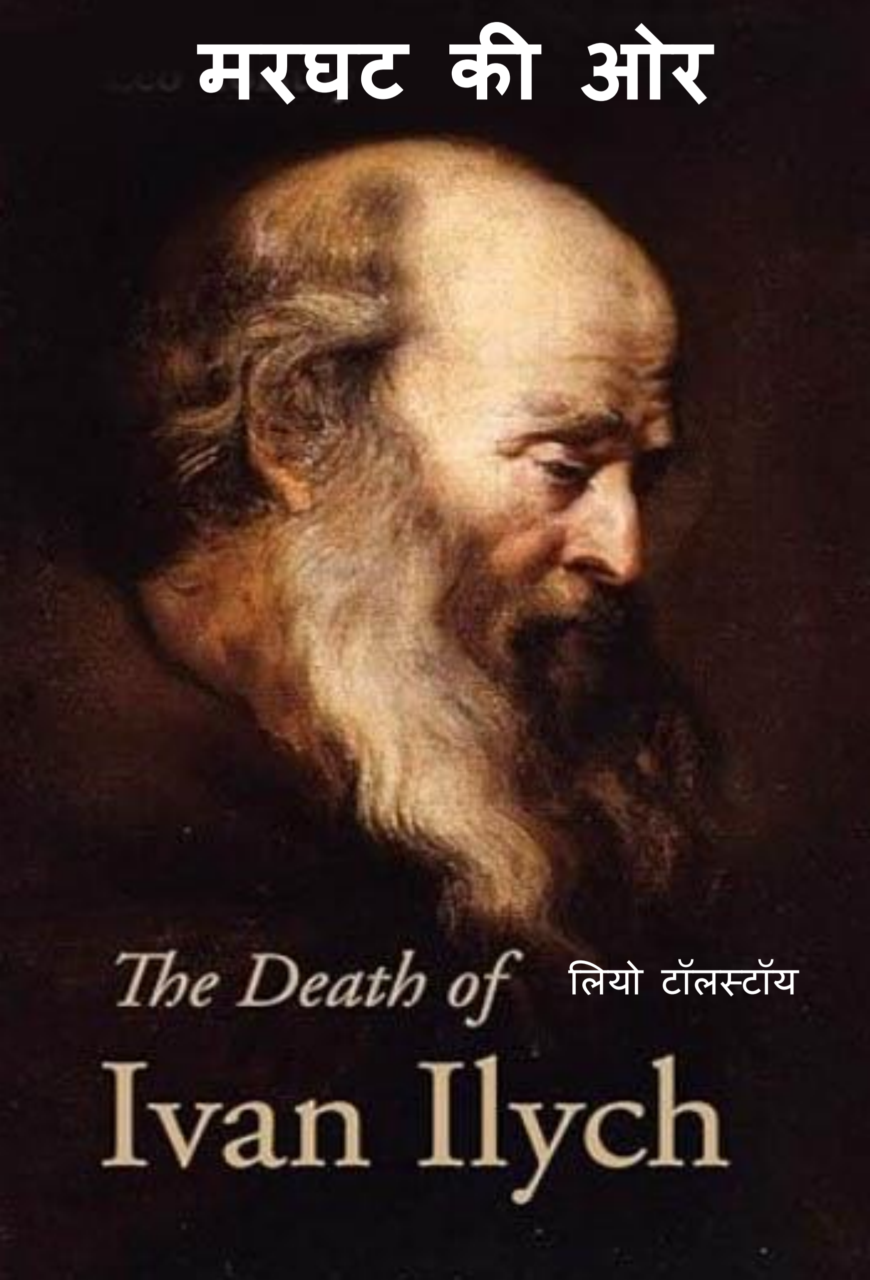
मरघट की ओर



The Death of

Ivan Ilych

लियो टॉलस्टॉय

मरघट की ओर

(टालस्टॉय कृत 'Death of Ivan Illeach' का हिन्दी अनुवाद)

रूपान्तरकार

रामनारायण अग्रवाल

१९५६

अंजलि प्रकाशन

५, देवनगर, नई दिल्ली—५

प्रकाशक
अंजलि प्रकाशन,
५, देवनगर, करोल बाग,
नई दिल्ली—५

मूल्य
सवा रुपया

मुद्रक—
रसिक प्रिंटर्स
५, संतनगर, करोल बाग,
नई दिल्ली—५

मरघट की ओर

दो शब्द

टालस्टाय के अधिकांश ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है और जनता ने उन्हें काफी पसन्द भी किया है। उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'अन्ना करेनिना' 'युद्ध एवं शान्ति' के अनुवाद कई स्थानों से निकले हैं। कुछ छोटे ग्रन्थों और उनके निबन्धों का प्रकाशन 'सस्ता साहित्य मण्डल' से भी हुआ है। प्रेम में भगवान, स्त्री और पुरुष, कलवार की करतूत, बालकों का विवेक, मालिक और मजदूर, जीवन साधन, हमारे जमाने की गुलामी, सामाजिक कुरीतियां आदि ऐसे कई ग्रन्थ हैं।

प्रस्तुत पुस्तक टालस्टाय के एक लघु उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है। टैस्ट एक मास्को संस्करण से लिया गया है। अनुवाद में मूल कथा के साथ चलने का प्रयत्न किया है। किन्तु मूल उपन्यास कुछ मनोवैज्ञानिक-सा और शुष्क होने के कारण कहीं-कहीं शिथिलता आना स्वाभाविक है। फिर भी प्रस्तुत उपन्यास में टालस्टाय ने एक बुद्धिजीवी के मानसिक अन्तर्द्वन्द, महत्वाकांक्षाओं और पारिवारिक जीवन के गत्यावरोध को खूबी के साथ दिखाया है।

आशा है पाठक प्रस्तुत लघु उपन्यास का भी टालस्टाय की अन्य पुस्तकों की तरह स्वागत करेंगे।

—राम नारायण अग्रवाल

[१]

जब मैलिवन्सकी का मुक़दमा चल रहा था तो अवकाश के समय, न्यायालय के विशाल भवन में, न्यायपालिका के सदस्य और पब्लिक-प्रोसीक्यूटर 'इवान इगोरोविच' शैबक की बैठक में इकट्ठे हुए और क्रासोन्सकी के मशहूर मामले पर बातचीत छिड़ गई।

'फैडोर वैसीलीविच' ने इस बात पर जोर दिया कि यह मामला उनके न्यायक्षेत्र के अन्तर्गत न था। 'इवान इगोरोविच' ने इसके विरुद्ध मत दिया, जबकि 'पीटर इवानोविच' बहस में जरा भी भाग न लेते हुए 'गज़ट' में मुँह छिपाये बैठा रहा।

"सज्जनो।" उसने कहा, "इवान इलिच' मर चुका है।"

"कब, कैसे?

"यहाँ, आप स्वयं पढ़ लीजिये," 'पीटर इवानोविच' ने प्रेस से अभी-अभी निकला ताज़ा पत्र 'फैडोर-वैसीलीविच' को देते हुए कहा। उसमें काली रेखाओं से घिरे ये शब्द लिखे थे:

"अतीव शोक के साथ प्रास्कोव्या फैडोरोवना गौलोविना दोस्तों और सम्बन्धियों को अपने प्रिय पति और न्यायपालिका के सदस्य, इवान इलिच गौलोविन, की मृत्यु की सूचना देती हैं। मृत्यु इस वर्ष, सन १८८२ की ४ फर्वरी को, हुई। दाह संस्कार शुक्रवार को दोपहर के एक बजे होगा।"

इवान इलिच उपस्थित सज्जनों के सहकारी थे और सभी उन्हें चाहते थे। कुछ सप्ताह से वे बीमार थे—एक ऐसे रोग से पीड़ित, जिसका

अच्छा होना मुश्किल है। उनका पद उनके लिये रिक्त रखा गया था किन्तु अनुमान था कि उनकी मृत्यु के बाद 'ऐलैक्सीव' की नियुक्ति उनके स्थान पर कर दी जायगी। और "विनीकोव' या 'शैबिल' में से किसी एक को ऐलैक्सीव का स्थान मिल जायगा। इसलिये इवान इलिच की मृत्यु का समाचार आने पर पहला विचार, जो उस बैठक में एकत्र हुए लोगों के मन में आया, यह था कि आखिर उनमें से या उनके परिचितों में से किस को तरक्की मिलेगी।

"मुझे विश्वास है कि मुझे विनीकोव या शैबिल का पद मिल जायेगा," फैडोर वैसीलीविच ने सोचा। "बहुत पहले ही मुझे इसका विश्वास दिला दिया गया था और इस तरक्की का मतलब होगा ऐलाउन्स के अतिरिक्त आठ सौ रूबल प्रतिवर्ष का अधिक वेतन।"

"अब मुझे 'कालुगा' के जरिये अपने साले की बदली के लिये प्रार्थना-पत्र देना चाहिये।" पीटर इवानोविच ने सोचा। "मेरी पत्नी बहुत खुश होगी, और फिर वह यह कभी न कहेगी कि मैं उसके सम्बन्धियों के लिये कुछ नहीं करता।"

"मैं समझ गया था कि अब वह बिस्तरे से नहीं उठेगा," पीटर इवानोविच ने जोर से कहा, "यह बहुत बुरा हुआ।"

"पर, सचमुच में, उसे हुआ क्या ?"

"डाक्टर कुछ न कह सके,—कम से कम वे कुछ निर्णय तो देते, पर सबने अलग-अलग बातें कहीं। जब पिछली बार मैं उससे मिला, तो मैं समझा कि वह अच्छा हो रहा है।"

"और मैं तो छुट्टियों के बाद उसे देख ही नहीं सका। हमेशा जाने की सोचता ही रहा।"

"क्या उसकी कोई सम्पत्ति भी थी ?"

"मेर ख्याल है, उसकी पत्नी के पास कुछ थी—पर बिल्कुल नगण्य।"

"हम सबको उसे देखने जाना चाहिए, पर वे इतनी दूर रहते हैं !"

"आपके यहाँ से दूर, यही मतलब है न। आपके स्थान से तो सभी कुछ दूर पड़ता है।"

"देखते हैं आप! मैं नदी के उस पार रहता हूँ, इसके लिये ये मुझे कभी क्षमा नहीं कर सकते," पीटर इवानोविच ने शैबक की ओर मुस्कराते हुए कहा। तब नगर के विभिन्न स्थानों के बीच की दूरियों के सम्बंध में बातचीत करते हुए वे कचहरी लौट आए।

इवान इलिच की मृत्यु के बाद होने वाली सम्भावित बदलियों और पद-परिवर्तनों पर तो विचार हुआ ही, साथ ही जिस किसी ने भी सुना, एक निकट परिचित की मृत्यु ने सबके हृदय में एक अस्पष्ट सी भावना अवश्य उठा दी, 'मरा इलिच ही है न कि वह स्वयं'।

हर किसी ने सोचा या अनुभव किया, "ठीक है, वह मर चुका है, पर मैं तो जीवित हूँ।" लेकिन इवान इलिच के अधिक निकट के परिचित, उसके तथाकथित मित्र, इस बात को सोचना न भूल सके कि अब उन्हें उसकी मृत्यु-संस्कार में शामिल होने का, और उसकी विधवा पत्नी को सान्त्वना देने का, कष्टप्रद काम भी करना पड़ेगा!

पीटर इवानोविच तथा फैडोर वैसीलीविच उसके निकटतम परिचित रहे थे। पीटर इवानोविच तो उसका 'कानून' का सहपाठी रहा था और अपने को उसके प्रति कृतज्ञ समझता था।

शाम की ब्यालू के समय अपनी पत्नी को इवान इलिच के देहान्त की सूचना देने के पश्चात उसने इस सम्भावना का भी जिक्र किया कि अब उसके भाई की बदली की जा सकती थी। फिर भोजन के पश्चात बिना विश्राम किये ही पीटर इवानोविच कपड़े पहन कर इवान इलिच के घर चला गया।

दरवाजे पर एक गाड़ी और दो कारें खड़ी हुई थीं। नीचे 'हाल' में दीवार से सटकर झुकी हुई, सुनहरे कपड़े से ढकी एक अर्थी रखी थी जिस पर कामदानी का काम हो रहा था। काले कपड़े पहने हुए दो महिलाएँ अपने 'फर' के लबादे उतार रही थीं। पीटर इवानो-

विच ने पहचान लिया कि उनमें से एक इवान इलिच की बहन थी किन्तु दूसरी उसके लिये एक अजनबी थी। उसका सहकारी 'श्वार्ज' सीढ़ियों से उतर रहा था। किन्तु इवानोविच 'पीटर' को घुसता हुआ देख कर, रुक गया और मानो यह कहने के लिये उसका मुँह खुला: इवान इलिच ने सब बातों को झमेले में डाल दिया है—मेरी और तुम्हारी तरह नहीं।

खूबसूरती से सजे हुए बालों और शाम के कपड़ों में अपनी इकहरी आकृति में 'श्वार्ज' काफी प्रभावशाली और गम्भीर लग रहा था। पर यह गम्भीरता उसके चरित्र की चंचलता से ज़रा भी मेल न खाती थी। उसने महिलाओं को अपने पीछे चलने का संकेत किया और धीरे से उन्हें ऊपर ले गया। श्वार्ज फिर नीचे नहीं आया और वहीं रहा जहाँ कि वह था। पीटर इवानोविच समझ गया कि वह इस बात का प्रबंध करना चाहता था कि शाम को ताश ही खेला जाय। महिलाएँ ऊपर विधवा के कमरे में चली गईं, और श्वार्ज ने गम्भीर ओठों किन्तु आँखों में छिपी चंचलता के बीच भौहों की कोरें घुमा कर उस बैठक की ओर संकेत किया जहाँ कि लाश रखी हुई थी।

पीटर इवानोविच, बिना यह समझे हुए कि ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए, कमरे में चला गया। वह सिर्फ इतना जानता था कि इन अवसरों पर क्रास का चिह्न बनाना चाहिये। कमरे में घुस कर उसने क्रास का चिह्न बनाया, फिर थोड़ा झुका। उसी समय, जहाँ तक कि उसके सिर और पैर की गति से मालूम हो सकता था, उसने कमरे की लम्बाई-चौड़ाई का अन्दाजा लगाया। दो नौजवान लड़के, जिनमें से एक हाई स्कूल में पढ़ता था, कमरे के बाहर जा रहे थे। एक वृद्ध व्यक्ति बिना हिले-डुले खड़ा था, और विचित्र रूप से झुकी हुई भौहों वाली एक महिला उसके कान में कुछ कह रही थी। एक मजबूत, शान्त क्लार्क जोर-जोर से कुछ पढ़ रहा था, और इस प्रकार जिससे किसी का भी ध्यान बँट जाता। रसोइये का सहकारी 'जैरासिम' पीटर इवानो-

विच की ओर धीरे-धीरे आया। वह फर्श पर कुछ फैला रहा था। इसे देखकर, उसी समय, पीटर इवानोविच को सड़ती हुई लाश की बदबू का भाव हुआ।

पिछली बार जब पीटर इवानोविच इवान इलिच के पास आया था तो उसने जैरासिम को पढ़ने के कमरे में देखा था। इवान इलिच उसे खासतौर से चाहता था और वह एक रोगिणी सेविका की तरह कर्त्तव्य पालन कर रहा था।

पीटर इवानोविच अर्थी, वस्तार्क और कमरे के एक कोने में रखी हुई धूप बत्तियों के बीच में थोड़ा झुक कर, क्रास का चित्र बना रहा था। फिर जब उसने देखा कि चित्र बनाते-बनाते उसे काफ़ी समय हो चुका है तो उसने यह काम बन्द कर दिया और लाश की ओर देखने लगा।

इलिच का निर्जीव शरीर, अन्य सब मरे हुए आदमियों की तरह, निस्तेज सा पड़ा था। उसके कड़े बाजू अर्थी में दोनों ओर लटक गये थे जबकि उसका सिर तकिये पर झुका हुआ था। उसकी भौंहें पीली पड़ गईं थीं और कनपटियों पर गड्ढे पड़ने से वे बाहर निकल आईं थीं, जैसाकि मरने पर होता है। नाक बाहर निकल आई थी और लगता था कि वह ओठों को दबा-सी रही है। वह काफी बदल चुका था और तब से, जबकि पीटर इवानोविच ने उसे देखा था, वह काफी पतला भी हो गया था। लेकिन जैसाकि मरे हुओं के साथ हमेशा होता है उसका चेहरा पहले से अधिक सुन्दर लग रहा था, और जब वह जीवित था तब से भी अधिक तेजपूर्ण उसके मुख के भाव यह बता रहे थे कि जो कुछ होना था हो चुका है—और ठीक ही हुआ है। दूसरे, उस भाव में सब जीवित प्राणियों के लिये एक चेतावनी भी थी। पीटर इवानोविच ने स्वयं को तसल्ली दी कि यह चेतावनी उस पर लागू नहीं होगी। उसने किसी परेशानी का अनुभव किया। फिर तेजी से एक 'क्रास' बना

कर वह कमरे से बाहर हो गया—इतनी तेजी के साथ, और इतने अनादर से, कि उसे स्वयं इसका आभास न हुआ।

दूसरे कमरे में पैर फैलाए हुये, और दोनों हाथों से पीछे हैट को ठीक करते हुए, श्वार्ज़ उसकी प्रतीक्षा में था। उस हँसमुख, सुगठित, सतेज, आकृति के देखने-भर से पीटर इवानोविच ने कुछ हल्कापन सा अनुभव किया। उसे लगा कि श्वार्ज़ इन सभी घटनाओं से ऊपर है और किन्हीं भी निराशापूर्ण प्रभावों के सामने वह आत्मसमर्पण नहीं कर सकता। उसके चेहरे से यह साफ जाहिर था कि इवान इलिच के लिये पूजा वगैरह करने से उसके आमोद-प्रमोद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। दूसरे शब्दों में ऐसा मानने का कोई कारण न था कि इस घटना से संध्या काल मजे में बिताने में कोई फर्क पड़ेगा। जैसे ही पीटर इवानोविच उधर से गुजरा उसने धीमे से कहा भी—"क्यों न फैडोर वैसिलीचिच के यहाँ खेल के लिये मिला जाये।" किन्तु उस शाम को पीटर इवानोविच किसी भी सूरत में खेल के लिये तैयार न था। प्रास्कोव्या फैडोरोवना, एक छोटी कद की ठिगनी मोटी औरत जो सब प्रयासों के बावजूद भी वैसी ही थी, और जिसकी भौहें काफी झुकी थीं, काले कपड़े पहने हुए, फीतों से अपना सर ढके, अन्य महिलाओं के साथ अपने कमरे से बाहर आई और उन्हें वहाँ ले गई जहाँकि मुर्दा पड़ा हुआ था। और कहा—"संस्कार अभी शुरू हो जायेगा। कृपया अन्दर जाइये।"

श्वार्ज एक अनिश्चित अन्दाज से सीधा खड़ा हो गया, मानो उसने इस निमन्त्रण को न तो स्वीकार ही किया हो और न अस्वीकार ही। प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने पीटर इवानोविच को पहचान कर एक साँस ली, उसके समीप गई, उसका हाथ अपने हाथ में लिया और कहा—"मैं जानती हूँ कि आप इवान इलिच के अभिन्न मित्र थे।" फिर किसी उचित उत्तर के लिये उसकी ओर देखा। पीटर इवानोविच समझ गया कि जिस प्रकार उस कमरे में क्रास का चिह्न बनाना जरूरी था, उसी प्रकार यहाँ उसे हाथ दबाकर, दुखपूर्ण स्वर में कहना चाहिये, "मुझ

पर विश्वास करो ।" उसने ऐसा ही किया पर उसे और फैडोरोवना दोनों को ही बात अच्छी न लगी ।

"मेरे साथ आइये, संस्कार होने से पहले मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ," विधवा के कहा, "मुझे अपना हाथ दो ।"

पीटर इवानोविच ने उसे अपना हाथ दे दिया और वे अन्दर के कमरे में चले गये, श्वार्ज के सामने होकर, जिसका मुँह मानो यह कहने के लिये खुला हुआ था :

'इस तरह तो हमारा ताश का खेल ही बेमज़ा हो गया । बुरा न मानिये यदि हम किसी और के साथ खेल लें ।'

पीटर इवानोविच ने और भी गहराई तथा उदासी से साँस ली और प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने उसके हाथ को कृतज्ञता से दबाया । ड्राइन्ग रूम में पहुँचने पर एक धुँधली बत्ती जला कर वे बैठ गये—वह एक सोफे पर और पीटर इवानोविच एक नीचे, मुलायम, स्प्रिंगदार कुशन पर । प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने उसे दूसरी सीट पर बैठाने के लिये कहना चाहा किन्तु यह सोचकर कि इन परिस्थितियों में उसे चुप रहना चाहिये, उसने अपना इरादा बदल दिया । कुशन पर बैठते हुये, पीटर इवानोविच को स्मरण आया कि किस तरह इवान इलिच ने इस कमरे को सजाया था और इस सम्बन्ध में उससे सलाह भी ली गई थी । सारे कमरे में फर्नीचर पड़ा था । जैसे ही वह सोफे तक गई, विधवा के काले शाल का फीता मेज के निकले हुए सिरे से उलझ गया । पीटर इवानोविच इसे निकालने के लिये उठा और उसके कुशन की स्प्रिंग भी उछल गई । विधवा के स्वयं फीता निकाल लेने पर वह अपनी सीट पर बैठ गया । लेकिन विधवा अभी पूरी तरह फीता न निकाल पाई थी । अत: वह फिर उठ खड़ा हुआ । जब यह सब हो चुका तो विधवा ने एक साफ रूमाल निकाला और रोना शुरू कर दिया । शाल और कुशन के झगड़े ने पीटर इवानोविच का मस्तिष्क कुछ शान्त कर दिया था, और वह अपने चेहरे पर गम्भीर मुद्रा बनाये बैठा था । इवान इलिच के रसोइये ने आकर इस

परिस्थिति में दख़ल दिया। वह यह बताने आया था कि उस स्थान की कीमत, जो कि प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने कब्र के लिए चुनी थी, दो सौ रूबल थी। उसने रोना बन्द कर दिया और एक घायल पशु की तरह पीटर इवानोविच की ओर देखते हुये कहा कि इतना मूल्य उसके लिये अधिक है। पीटर इवानोविच ने मौन संकेतों में कहा—'यह निस्संदेह अधिक है'।

"आप सिगरेट पीजिये।" उसने एक ऊँची किन्तु भर्राई हुई आवाज़ में कहा और कब्र के स्थान की क़ीमत के बारे में सोकोलोव से बातचीत करने लगी।

सिगरेट जलाते समय पीटर इवानोविच ने उसे कब्रिस्तान में बहुत सी जगहों के लिये बारीकी से पूछते हुए और फिर अन्त में एक को लेने का फैसला करते हुए सुना। यह सब हो जाने पर उसने मर्शिया गाने वालों को बुलाने के संबंध में कुछ आदेश दिये। और तब सोकोलोव कमरे से बाहर चला गया।

"मैं हर चीज़ की खुद ही देख-भाल करती हूँ।" मेज पर पड़ी तस्वीरों को हटाते हुए उसने पीटर इवानोविच को बताया और यह देख कर कि सिगरेट की राख से मेज खराब हो गई है उसने शीघ्र ही एक राख डालने की ट्रे उसके सामने कर दी और कहा—"मुझे यह कहना एक बहाना मालूम पड़ता है कि मेरे दुख ने मुझे व्यावहारिक बातों की ओर से उदासीन कर दिया है। इसके विपरीत कोई चीज़ हो भी—मैं जानती हूँ कि इससे मुझे सन्तोष नहीं वरन् दुख होगा—तो यह उनके सम्बन्ध में ही होगी।" उसने अपना रूमाल फिर निकाल लिया मानो रोने की तैयारी कर रही हो। पर अकस्मात, मानो अपनी भावनाओं पर काबू करते हुए, वह चैतन्य हो गई और शान्ति से कहने लगी—"मैं आप से बात करना चाहती हूँ।"

पीटर इवानोविच कुशन को संभालते हुए झुका।

"अन्त के कुछ दिनों में उन्हें काफ़ी तकलीफ हुई।"

"अच्छा ?" पीटर इवानोविच ने पूछा ।

"ओह ! बुरी तरह से ! वे लगातार चीखते रहे, मिनट नहीं घंटों तक । आखिर के तीन दिनों तक वह लगातार चीखे । यह असह्य था । मैं बता नहीं सकती कि मैंने इसे कैसे सहा । उनकी चिल्लाहट तीसरे कमरे तक सुनी जा सकती थी ।"

"क्या यह सम्भव है कि वे इस सम्पूर्ण समय में होश में रहे ?" पीटर इवानोविच ने पूँछा ।

"हाँ," उसने कहा, "अन्तिम क्षण तक । मरने से पाव घन्टा पहले ही उन्होंने हमसे बाहर चले जाने के लिये और वोलोद्या को ले जाने के लिये कहा था ।"

एक ऐसे व्यक्ति की तकलीफ के ख्याल ने ही, जिसेकि वह इतनी नज़दीकी से जानता था,—पहले एक हँसते-खेलते बच्चे के रूप में, फिर सहपाठी और तत्पश्चात् एक सहकारी के रूप में—अकस्मात ही पीटर इवानोविच को, अपने स्वयं के अभद्र विचारों और इस स्त्री के अभिमान के बावजूद भी, आतंकित कर दिया । उसे फिर पीली पड़ी हुई भौहों और ओठों को दबाती हुई उस नाक का स्मरण हो आया और एक व्यक्तिगत डर से वह काँप गया ।

"तीन दिन की भयानक तकलीफ, और फिर मौत ! आखिर, मैं भी एक दिन इसी तरह मर सकता हूँ ।" उसने सोचा और कुछ क्षण के लिये उसकी कँपकपी बँध गई; वह स्वयं नही जानता कि क्यों । फिर अचानक उसे ख्याल आया कि यह सब इवान इलिच के साथ हुआ था, न कि उसके साथ । न यह स्वयं उसके साथ होना ही चाहिये था, और न हो ही सकता था; और यह कि ऐसा सोचना भी निराशा के प्रति आत्मसमर्पण होगा । अब पीटर इवानोविच निश्चिन्त हो गया । और उसने इवान इलिच की मृत्यु के सम्बन्ध में दिलचस्पी से विस्तृत रूप से पूछना आरम्भ कर दिया, मानो कि मृत्यु इवान इलिच के लिये एक प्राकृतिक घटना थी न कि स्वयं उसके लिये ।

इवान इलिच ने जो कुछ भयानक शारीरिक यातनाएँ सहीं थीं उनका विस्तृत वर्णन करने के बाद, प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने अपने काम में लग जाना आवश्यक समझा। पर काम में उसका चित्त न लगा

"ओह ! पीटर इवानोविच, यह कितना मुश्किल है !" और उसने फिर रोना प्रारम्भ कर दिया।

पीटर इवानोविच ने एक सांस ली और प्रतीक्षा की कि वह अपना रोना बन्द कर दे। जब यह हो चुका तो उसने फिर बात करना शुरू किया और स्पष्टतया मुख्य बात पर आ गई। स्पष्टतया उसने यह पूँछा कि अपने पति की मृत्यु पर वह सरकार से रुपया किस तरह उधार ले सकती थी। उसने यह दिखाने की कोशिश की कि वह अपनी पेन्शन के विषय में पीटर इवानोविच की सलाह माँग रही है, किन्तु वह शीघ्र ही जान गया कि इस सम्बन्ध में वह स्वयं विस्तृत रूप से, यहाँ तक कि उससे भी अधिक, परिचित थी। वह जानती थी कि अपने पति की मृत्यु के फलस्वरूप उसे सरकार से क्या मिल सकता था। पर वह जानना चाहती थी कि कितना अधिक धन वह सरकार से और ले सकती थी। पीटर इवानोविच ने धन प्राप्त करने का कोई तरीका सोच निकालने की कोशिश की। किन्तु कुछ देर सोचने के बाद, शिष्टतावश सरकार को उसकी कंजूसी के लिये कोसते हुए, उसने बताया कि और अधिक कुछ भी नहीं किया जा सकता है। तब फैडोरोवना ने सांस ली और प्रत्यक्षतया अपने इस महमान से छुटकारा पाने का तरीका ढूढ़ना चाहा। यह देख कर पीटर अपनी सिगरेट निकाली, उठा, उसके हाथ को दबाया और कमरे के बाहर चला गया।

ब्यालू करने के कमरे में घड़ी टंगी हुई थी जिसे कि इवान इलिच बहुत पसन्द करता था और जिसे उसने एक पुरानी दूकान से खरीदा था। इसी कमरे में एक पुरोहित और कुछ परिचित व्यक्ति भी थे, जो मृत्यु-संस्कार में आये थे। पीटर इवानोविच ने इवान इलिच की सुन्दर युवा

पुत्री को भी पहिचाना। वह काले कपड़े पहने थी और उसकी दुबली-पतली आकृति पहले से भी अधिक दुबली-पतली लग रही थी। उसके चेहरे पर धुँधले, अस्पष्ट, निश्चित और क्रोध के से भाव थे और वह पीटर इवानोविच के सामने इस प्रकार झुकी, मानो वही कुछ दोषी हो। उसके पीछे उसी प्रकार के भाव लिये एक धनी युवक, एक निरीक्षक न्यायाधीश, खड़ा था जिसेकि पीटर इवानोविच जानता था। जैसाकि उसने सुना था यह उसकी बेटी का चहेता था। दुःख पूर्ण स्वर में उसने उसे नमस्कार किया। वह लाश के कमरे में जाने ही वाला था कि सीढ़ियों के नीचे से उसे इवान इलिच के स्कूल जाने वाले बेटे की आकृति दीखी, जो बिल्कुल अपने बाप की तरह था। वह एक छोटा सा इवान इलिच लगता था, जैसाकि पीटर इवानोविच को स्मरण हुआ जबकि वे साथ-साथ कानून पढ़ते थे। पीटर इवानोविच ने सर हिलाया और लाश वाले कमरे में चला गया। संस्कार शुरू हुआ—बत्तियाँ, धूप, आँसू, सिसकियाँ।

पीटर इवानोविच चुपचाप अपने पैरों की ओर देखता खड़ा रहा। उसने मृत व्यक्ति की ओर एक बार भी नहीं देखा। किसी भी निराशा-पूर्ण विचार से वह प्रभावित नहीं हुआ और कमरा भी उसने सबसे पहले छोड़ दिया। बाहर कोई न था। हाँ, जैरासिम तेजी के साथ मृत व्यक्ति के कमरे से बाहर आया और अपने मजबूत हाथों से कोटों की तलाशी ली।

"हाँ तो, दोस्त जैरासिम," पीटर इवानोविच ने मानो कुछ कहने के लिये कहा। "यह एक दुखपूर्ण घटना है, है न?"

"ईश्वर की इच्छा! हम सभी एक दिन इसी गति को पहुँचेंगे।" जैरासिम ने अपने दाँत दिखाते हुए कहा—एक स्वस्थ किसान के एकसे श्वेत दाँत। एक व्यस्त आदमी की तरह उसने शीघ्रता से सामने का दर्वाजा खोला, सईस को पुकारा, पीटर इवानोविच को गाड़ी में चढ़ाने

में मदद दी और फिर तेजी से लौट आया। आगे क्या करना है, मानो इसकी तैयारी कर रहा हो।

धूपबत्ती, मृत शरीर और कारबोलिक एसिड की दुर्गन्ध के बाद खुली हवा पीटर इवानोविच को भली मालूम हुई।

"कहाँ को साहब?" ड्राइवर ने पूँछा।

"काफी देर हो चुकी है। मैं फैडोर वैसीलीविच को आवाज़ दूँगा।" पीटर इवानोविच ने कहा।

[२]

इवान इलिच का जीवन बहुत साधारण और सरल रहा था, और इसीलिये बहुत रंजीदा। वह उच्च न्यायालय का सदस्य था और पैंतालीस वर्ष की अवस्था में उसका देहावसान हो गया। एक आफीसर होने के कारण उसके पिता ने अनेकों अधिकारियों के नीचे काम किया था। जीवन-काल की इस लम्बी यात्रा में उन्होंने एक ऐसी सुव्यवस्थित स्थिति को प्राप्त कर लिया था जहाँ से कि वे हटाये नहीं जा सकते थे। वे उन व्यक्तियों में से एक थे जो निस्संदेह किसी भी जिम्मेदारी के काम के लिये सर्वथा अनुपयुक्त थे किन्तु अपने प्रभाव के कारण, जिससे छः हजार से लेकर दस हजार तक के आशातीत वेतन वाले पद सुरक्षित जा सकते हैं, उन्हें मायूस न होना पड़ा।

हाँ तो, अनेक महान संस्थाओं के सदस्य और प्रिवी काउन्सलर, इलिच एफीनोविच गौलोविन की स्थिति यह थी।

उनके तीन बेटे थे और इवान इलिच इनमें दूसरा था। सबसे बड़ा बेटा सरकारी विभाग में अपने पिता के पद-चिह्नों पर चल रहा था और शीघ्र ही अपनी प्रगति के दौरान में अपने पिता के समकक्ष किसी पद को प्राप्त करने वाला था। तीसरा बेटा असफल प्रमाणित हुआ। उसने कभी इस और कभी उस पद पर रह कर अपने जीवन का सर्वनाश कर लिया था और रेलवे में नौकरी बजा रहा था। उसके पिता और भाई और उनसे भी अधिक उनकी पत्नियाँ केवल उससे मिलना ही नापसन्द नहीं करती थीं, वरन् जब तक कि वह विवश न हो जाँय, उसके अस्तित्त्व को भी

भूलने का प्रयास करतीं। उसकी बहन ने अपने पिता की तरह के पीटसबर्ग के एक सरकारी अफसर शैनग्रोफ से अपने हाथ पीले किये थे। बीच का लड़का इवान इलिच था—बिल्कुल मध्यम प्रकृति का। न तो वह अपने बड़े भाई की तरह विनम्र और शिष्टाचारी था और न ही अपने छोटे भाई की तरह उजड्ड किन्तु उन दोनों के बीच एक सुखी, सुयोग्य, रज़ामन्द और व्यावहारिक जीव।

उसने अपने छोटे भाई के साथ कानून पढ़ा था। लेकिन भाई अपने पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में विफल होने के कारण, जब पाँचवीं कक्षा में था तभी, स्कूल से निकाल दिया गया था। इवान इलिच स्कूल में भी, जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह, उसी स्वभाव का था—साहसी, प्रसन्नमुख, मिलनसार। अपने कर्त्तव्य के पालन में वह सदा नियमित रहा। पर बचपन और युवावस्था की तुलना में अब उसमें काफी परिवर्तन हो गया था। यौवन में पदार्पण करते ही वह ऊँचे पद के व्यक्तियों की ओर खिंचने लगा था—ठीक जिस प्रकार कि पतंगा प्रकाश की ओर खिंचता है। उनके जीवन-यापन के ढंग और विचारों से प्रभावित होते हुए उसने उच्च वर्ग की विलासिता, कामुकता और अभिमान के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था, किन्तु उसी सीमा तक जहाँ तककि उसकी आत्मा इसे ठीक समझती थी। स्कूल जीवन में उसने कुछ ऐसे वीभत्स काम किये थे जिनके कारण उसे बहुत अधिक शर्मिन्दा होना पड़ा था। पर बाद में जब उसने देखा कि ऐसे-ऐसे निन्दित कार्य उच्चपदाधिकारी भी करते हैं तो उसे अधिक अफसोस नहीं हुआ—और अवश्य ही उसने उन्हें भुला दिया।

कानून के स्कूल में शिक्षा पूरी हो जाने पर इवान इलिच ने जीवन में प्रवेश किया। जब खर्च के लिये आवश्यक रुपया मिला तो इवान इलिच ने मशहूर दर्जी 'शार्मेर' की दूकान पर अपने कपड़े सिलवाये, घड़ी पर अपने नाम का एक मैडल खुदवाया और अपने प्रोफेसर तथा स्कूल के संरक्षक राजकुमार से बिदाई ली। फिर उसने 'डौनोन' के

प्रथम श्रेणी के विश्राम ग्रह में अपने साथियों को एक प्रीतिभोज दिया और अपने नये रेशमी कपड़ों, हजामत बनाने के बक्स और यात्रा का अन्य ऐशोआराम का सामान लेकर उस प्रदेश को चला गया, जहाँकि गवर्नर की सिफारिश से उसे सिविल सर्विस में एक सरकारी पद मिल गया था।

इस प्रदेश में भी, कानून के स्कूल की तरह, इवान इलिच ने अपनी एक सुदृढ़ स्थिति बनाली। अपने सभी सरकारी कामों को निबाहते हुए, उसने अपनी दिनचर्या बना ली और साथ ही आमोद-प्रमोद भी करता रहा। अवसर पड़ने पर वह समीप के जिलों में सरकारी दौरे पर जाता। जहाँ तक सम्भव है अपने से बड़े और छोटे सभी के साथ उसका बर्ताव आदर-पूर्ण था। सैक्रेटेरियट से सम्बन्धित सभी कार्यों को उसने इस जिम्मेदारी से निबाहा कि पिता को उस पर गर्व हो सकता था।

यौवन और आमोद-प्रमोद की वस्तुओं में काफी रुचि होने पर भी सरकारी कामों में वह काफी गम्भीर और अनुशासन प्रिय था। हाँ, सामाजिक सम्बन्धों में वह काफी विनोदशील और व्यवहार-कुशल था। गवर्नर और उसकी पत्नी के परिवार के साथ उसके सम्बन्ध काफी अच्छे थे।

यहाँ उसका सम्बन्ध कुछ महिलाओं के साथ आया जो इस फैशनेबिल युवक अफ़सर की ओर अधिकाधिक आकर्षित होती गईं। दूसरे, यहाँ कुछ नशेबाज भी थे जो जिलों का दौरा करने दल-बल सहित जाया करते थे और फिर शाम की ब्यालू के पश्चात संदेहास्पद बाजारों की सैर करने निकल जाया करते थे। गवर्नर और उसकी बीबी की जीहजूरी करने वाले भी बहुत से थे किन्तु यह सब इतनी होशियारी से होता था कि इसके लिये 'जीहजूरी' नाम नहीं रखा जा सकता था। एक फ्रांसीसी कहावत के अनुसार यह श्वेत हाथों से श्वेत कपड़ों और अच्छी सोसाइटी के लोगों में, और फलतः उच्च पदाधिकारियों की स्वीकृति के साथ, होता था।

पाँच साल तक इवान इलिच ने इस पद पर नौकरी बजाई। और

तब उस के सरकारी जीवन में एक परिवर्तन आगया। न्याय-संस्थाओं में कुछ नये संशोधन हुए और नये व्यक्तियों की आवश्यकता हुई। इवान इलिच को भी सौभाग्य से 'निरीक्षक न्यायाधीश' का पद मिल गया और उसने इसे स्वीकार कर लिया। पद दूसरे प्रदेश में था। अतः पुराने सम्बन्धों को तोड़ कर नये सम्बन्ध स्थापित करने को वह तत्पर हो गया। उसके दोस्त उसे बिदाई देने के लिये मिले। एक ग्रूप-फोटोग्राफ लिया गया और एक चाँदी के चौखटे में मढ़ कर उसे भेंट कर दिया गया। वह अपने नये पद के लिये रवाना हो गया।

'निरीक्षक न्यायाधीश' की हैसियत में भी वह, अपने प्राचीन पद की तरह, काफी प्रभाव पूर्ण और ठाट-बाट का आदमी रहा—व्यक्तिगत जीवन को सरकारी कर्तव्यों से अलग करने में पूर्ण समर्थ। अब उसका काम भी पहले की अपेक्षा अधिक आकर्षक और दिलचस्प था।

पहले पद पर कीमती कपड़े पहन कर उन आफीसरों के हुजूम में से होकर निकलना, जो गवर्नर की प्रतीक्षा में रहते थे और जो इवान इलिच से इसलिए जलते थे कि गवर्नर और उसके परिवार के साथ उसके आपस के से सम्बन्ध थे, उसे काफी सुहावना लगता था। सैक्रेटेरियट के क्लर्क अथवा पुलिस आफीसरों को छोड़ कर और कोई उसके आश्रित न था। जब वह किसी विशेष कार्य से जाता तो उनके साथ बहुत नम्रता से बर्ताव करता था—यह दिखाने के लिए कि देखो वह, जिसके पास उन्हें कुचलने की शक्ति है, इतना सरल व्यवहार रख रहा है, पर तब ऐसे व्यक्ति अधिक न थे।

लेकिन अब एक निरीक्षक न्यायाधीश की हैसियत में इवान इलिच को यह अहसास होता कि कुछ को छोड़ कर लगभग सभी, यहाँ तक कि बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण और आत्मसन्तोषी व्यक्ति भी, उसकी मुट्ठी में हैं। किसी कागज पर किसी भी शीर्षक से कुछ पंक्तियाँ लिखने की देर है कि कोई भी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उसके सामने गवाह या अभियुक्त के रूप में लाया जा सकता है। इससे

उसे संतोष मिलता। इवान इलिच ने कभी भी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया वरन् इसके विपरीत उसने अपने व्यवहार को और भी नम्र कर लिया। लेकिन जब उसके सहयोगियों और मातहतों को इसका अहसास हुआ तो इस बात की संभावना कि इलिच उन प्रभाव घट जाएगा उनके कार्य्यालय की दिलचस्पी का मुख्य विषय बनी रही। अपने कार्य्य में, और खासकर निरीक्षण में, उसने शीघ्र ही केस के कानूनी मसलों से सम्बन्धित व्यर्थ की बातों से बच निकलने का ढंग समझ लिया। अधिक उलझे हुए मामले इस सीमा तक सुलझने लगे कि तत्सम्बन्धित सभी व्यक्तिगत रायों से दूर रह कर भी कागज पर केवल उसकी खास बातें ही व्यक्त की जा सकें। यह काम काफी कठिन था। फिर भी अठारह सौ चौसठ के कानून को लागू करने वालों में इवान इलिच पहला आदमी था।

इस नए राज्य में 'निरीक्षक न्यायाधीश' का पद ग्रहण करने पर उसने नए परिचय किये, नए सम्बन्ध कायम किये, अपने लिए एक नई ज़मीन तय्यार की और तय्यार किया एक नया वातावरण। राज्य के अधिकारियों के प्रति उसका बर्ताव कुछ तटस्थता का रहा किन्तु नगर के वकीलों तथा धनी वर्ग में उसके अनेक मित्र थे। सरकार के प्रति भी उसे कुछ असन्तोष था।

इवान इलिच इस नए राज्य में आराम से जम गया। वहाँ की सोसाइटी भी, जिसका झुकाव नए गवर्नर के विरोध की ओर था, काफी उदार थी। उसका वेतन भी अच्छा था। उसने ब्रिज की किस्म का एक खेल खेलना शुरू कर दिया। इससे उसकी ज़िन्दगी काफी मजेदार बन गई। उसे ताश खेलना अच्छा लगता था, इसलिए वह काफी आनन्द-विनोद के साथ खेलता था, और वह इस भाँति हिसाब लगाता कि प्रायः उसकी जीत ही होती।

दो वर्ष वहाँ रहने के बाद, वह अपनी भावी पत्नी प्रास्कोव्या फ़ैडोरोवना से मिला, जोकि उसकी सोसाइटी में सबसे अधिक

आकर्षक, चतुर और योग्य लड़की थी। निरीक्षक न्यायाधीश पद के सम्पूर्ण कर्तव्यों को करने के बाद थक जाने पर आमोद-प्रमोद के बीच, इवान इलिच ने उसके साथ भी हँसी-मज़ाक का रिश्ता स्थापित कर लिया।

पहले पद पर वह नृत्य का आदी हो गया था किन्तु अब एक निरीक्षक न्यायाधीश के रूप में उसके लिए नृत्य सम्भव न था। यदि अब वह नाचता तो मानो सिर्फ यह दिखाने के लिये कि इतनी प्रगति और इतने ऊँचे सरकारी पद पर पहुँच जाने के बाद भी अब जब नाचने का प्रश्न आया तो वह हजारों से बेहतर नाच सकता है। इस प्रकार एक शाम को वह कभी प्रास्कोव्या फैडोरोवना के साथ नाचा। नृत्य के पहले दिन ही उसने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया। फैडोरोवना उसके प्यार में पड़ गई। शुरू में उसका इरादा विवाह करने का न था। लेकिन प्यार होने के बाद उसने सोचा—"आखिर मैं विवाह क्यों न करूँ ?"

प्रास्कोव्या फैडोरोवना कुलीन घराने की थी। बदसूरत भी न थी और उसके पास कुछ सम्पति भी थी। इवान इलिच किसी और अच्छी अर्द्धांगिनी की कल्पना कर सकता था लेकिन यह सम्बन्ध भी ठीक ही था। उसे काफी वेतन मिलता था और उसे अनुमान था कि इतनी ही आय उसकी सम्पत्ति से हो जाएगी। उसके सम्बन्धी काफी अच्छे थे और वह एक अच्छी,खूबसूरत,जवान औरत थी। यह कहना कि इलिच ने शादी इसलिए की कि वह उससे प्यार करता था, और इसके अतिरिक्त उसे जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण से हमदर्दी थी, उतना ही गलत होगा जितना यह कहना कि उसने शादी इसलिए की कि उसके समाज ने इसकी स्वीकृति दे दी थी। हाँ, इन दोनों ही बातों ने उसे प्रभावित किया था। विवाह से उसे व्यक्तिगत संतोष मिला और दूसरे उसके सभी उच्च सम्बन्धियों ने भी इस विवाह को उचित ही समझा।

इस प्रकार इवान इलिच की शादी हो गई। विवाह की तैयारी

से लेकर विवाहित जीवन के प्रारम्भ के दिन तक जब तक कि उसकी पत्नी गर्भवती नहीं हो गई, प्रणय-चुम्बन, आलिंगन, प्रेम-मुहब्बत और अपनत्व के कारण अच्छे लगे। इसलिए वह सोचने लगा कि विवाह से उसके आरामपसन्द और जीवन के प्रति मस्त दृष्टि-कोण में कोई खलल नहीं पड़ेगा। लेकिन उसकी पत्नी के गर्भवती होने के पहले महीने से ही एक न एक नई, असह्य, निराशाजनक घटना होने लगीं जिससे छुटकारे का कोई मार्ग न था।

बिना किसी कारण उसकी पत्नी उसके आराम और शांति में खलल डालती। वह यह आशा करती कि इलिच अपना सारा समय उसी की देख-रेख में लगाये। इसलिए उसकी हर बात में नुकताचीनी करती और लड़ती-झगड़ती थी।

प्रारम्भ में तो उसने इस परिस्थिति से उदासीन होकर पहले की तरह आरामतलब जीवन बिताने की कोशिश की। अपनी पत्नी के चिड़-चिड़ेपन से उपेक्षा भाव रखते हुए ताश खेलने के लिये वह घर पर दोस्तों को निमन्त्रण देता, क्लब चला जाता या शाम का समय दोस्तों के साथ बिताता, पर एक दिन तो उसकी पत्नी ने बड़े कड़े शब्द स्तैमाल किये और उसे खूब आड़े हाथों लिया। और फिर उसका इस तरह बुरा-भला कहना जारी रहने लगा। वह चौकन्ना हो गया। अब उसे अहसास हुआ कि प्रास्कोव्या फैडोरोवना के साथ उसका विवाह होने पर किसी भी दशा में वह हमेशा सुखी, सुरक्षित रहे ऐसा नहीं है। वरन् इसके विपरीत वह उसके शांति, सुख और संतोष में बाधक है। और यह भी कि इस मुसीबत की जिन्दगी से बचने के लिये उसे कोई रास्ता खोजना पड़ेगा। उसने ऐसा रास्ता खोजना शुरू भी कर दिया। उसके सरकारी काम प्रास्कोव्या फैडोरोवना पर काफी प्रभाव डालते थे और इसी सरकारी काम का बहाना बना कर अपनी स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखने के लिये वह पत्नी से लड़ता-झगड़ता था।

बच्चे के जन्म के बाद उसके पालन-पोषण में अनेक विफलताएँ

आईं और फिर माँ तथा बच्चे की बीमारी, जिसमें कि इवान इलिच से सहानुभूति की आशा की जाती थी पर जिसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था, के कारण घर से बाहर एक सुरक्षित, शांतिपूर्ण अस्तित्व खोज लेना उसके लिये और भी अधिक आवश्यक हो गया।

जितनी ही उसकी पत्नी अधिकाधिक चिड़चिड़ी होती गई, सरकारी काम को वह अपने आकर्षण का केन्द्र बनाता रहा। वह अपने काम में पहले से अधिक दिलचस्पी लेने लगा और उसकी महत्वाकांक्षाएँ भी बढ़ गईं।

शीघ्र ही, अपनी शादी के एक वर्ष के अन्दर ही, उसने अनुभव कर लिया कि यद्यपि विवाह से जीवन में थोड़ा-बहुत आराम मिल सकता है, पर वास्तव में यह एक बहुत ही उलझा हुआ मामला है और इसके बाद भी समाज से स्वीकृत एक सुन्दर जीवन बिताने के लिये यह आवश्यक है कि सरकारी कामों की तरह विवाहित जीवन के प्रति भी एक निश्चित दृष्टिकोण रखा जाय।

विवाहित जीवन के प्रति उसने ऐसा दृष्टिकोण अपना भी लिया। घर से उसका सिर्फ इतना लगाव रह गया—भोजन और बसेरा। यह उसे मिल सकता था—और शिष्टाचार भी। जहाँ तक बाकी चीज़ों का प्रश्न था, उसे आनन्द और मनोरञ्जन की ही जरूरत थी और यह जरूरत वह पूरी भी कर लेता था। लेकिन जब भी विरोध या झगड़े की नौबत आती वह अपने सरकारी कामों के एकान्त झुरमुटे में खो जाता और इसमें उसे सन्तोष मिलता।

इवान इलिच एक अच्छा अफसर समझा जाता था, इसलिए तीन वर्ष पश्चात् वह असिस्टैन्ट पब्लिक प्रासैक्यूटर बना दिया गया। कुछ नए काम बढ़ जाने से, किसी को भी बन्दी बना लेने के अधिकार से, उसके भाषणों की महत्ता से और सभी कामों में सफलता मिलती रहने से उसका काम काफी आकर्षक हो गया।

और भी बच्चे पैदा हुए। उसकी पत्नी अधिकाधिक झगड़ालू और

चिड़चिड़ी होती गई। लेकिन उस दृष्टिकोण के कारण, जो कि इवान इलिच ने अपने घर के प्रति अपना लिया था, वह अधिक परेशान नहीं हुआ।

सात वर्ष उस नगर में नौकरी बजाने के बाद वह एक दूसरे राज्य में पब्लिक प्रासैक्यूटर बना कर भेज दिया गया। वह चला गया; पर उसके पास रुपये की कमी थी। दूसरे, उसकी पत्नी ने वह स्थान पसन्द भी नहीं किया। यद्यपि वेतन पहले से अधिक था पर खर्चा भी काफी था। फिर उनके दो बच्चे भी मर गये और पारिवारिक जीवन पहले से भी अधिक दुष्कर हो गया।

अपने नये जीवन में जिस किसी भी असुविधा का सामना करना पड़ा, उन सब के लिये प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने अपने पति को ही दोष दिया। पति और पत्नी के बीच बहुत सी बातों, खास कर बच्चों की शिक्षा-सम्बन्धी बातों, से पिछले झगड़े बंद हो गये। पर वे झगड़े दुबारा कभी भी उठ सकते थे। बिरले ही अवसर आते जब वे एकमत होते। यह मतैक्य भी अधिक समय तक न चलता। कुछ समय के लिये जैसे वे शान्त हो जाते और फिर वैषम्य के असीम समुद्र में एक दूसरे से अलग बहते से चले जाते। अगर इवान इलिच यह इच्छा करता कि यह वैषम्य नहीं रहना चाहिये तो शायद इस वैषम्य से उसे दुख होता, परन्तु इवान इलिच ने तो कभी इसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। उसका तो उद्देश्य था पारिवारिक जीवन की इस बुराई से अधिकाधिक मुक्त होना और शिष्टाचार तक सीमित रहना। परिवार के साथ कम से कम समय बिताकर उसने यह अलगाव पा भी लिया। जब वह घर पर होता तो भी अनेकों बाहर के लोग उपस्थित होने से पत्नी और बच्चों से उसका साक्षात्कार कम ही होता।

सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसे सरकारी काम करने पड़ते थे। अब उसके जीवन की सम्पूर्ण दिलचस्पी सरकारी दुनियां में केन्द्रित हो गई थी। अपनी शक्ति का ज्ञान, जिसे चाहे उसे बर्बाद कर देने की सामर्थ्य, कचहरी में बैठने का बड़प्पन, अपने सहकारियों से सम्बन्ध, बड़ों

और छोटों सभी के साथ उसकी सफलता, और सबसे ऊपर मामलों को सुलझाने में उसकी योग्यता, इन सब ने—इन सब के आनन्द ने—उसे हर्ष से पुलकित कर दिया। साथियों के साथ आमोद-प्रमोद भी कम न होता था। उसका सम्पूर्ण जीवन इसी प्रकार चलने लगा जैसा कि वह चाहता था—सुखी और नियमित।

इस प्रकार सात वर्ष तक औरचलता रहा। उसकी सबसे बड़ी बेटी सोलह वर्ष की हो चुकी थी, एक बच्चा मर चुका था और एक लड़का और था। इवान इलिच उसे कानून के स्कूल में भर्ती करना चाहता था, किन्तु उन्हें चिढ़ाने के लिये प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने उसे हाई स्कूल में भर्ती कर दिया। लड़की की पढ़ाई घर पर हुई थी और वह पढ़ती भी ठीक थी। लड़का भी पढ़ाई में बुरा न था।

[२]

इस प्रकार शादी के बाद सत्रह साल बीत गये थे। इलिच एक अनुभवी पब्लिक प्रासैक्यूटर हो चुका था। एक अभीप्सित पद की प्रतीक्षा में उसने कई बार बदली पर जाने से इन्कार कर दिया था। एक आकस्मिक और दुखद घटना ने उसके जीवन की शांति को खत्म कर दिया। उसे आशा थी कि किसी विश्वविद्यालय वाले नगर में उसे 'अध्यक्ष न्यायाधीश' का पद मिल जायगा। पर किसी प्रकार 'हैप्पी' आगे आ गया और उसकी नियुक्ति इस पद पर हो गई। इवान इलिच को बुरा लगा। वह 'हैप्पी' और उससे बड़े अफसरों से लड़ा। नतीजा यह हुआ कि अधिकारी उसके प्रति उदासीन हो गये और अन्य नियुक्तियों के समय भी उसकी कोई पूछ न हुई।

यह इवान इलिच के जीवन के सबसे कठिन वर्ष सन् १८८० में हुआ। इसी समय उसे अहसास हुआ कि अपने परिवार को चलाने के लिये उसका वेतन पर्याप्त न था और दूसरे यह कि उसकी पर्वाह नहीं की गई थी। और यही नहीं, बात उसे जो बहुत बुरी और बेइन्साफी लगी थी, औरों के लिये वह एक साधारण घटना थी। उसके पिता ने भी उसकी सहायता करना अपना कर्त्तव्य न समझा था। इवान इलिच को लगा कि सबने उसे छोड़ दिया है और सभी साढ़े तीन हज़ार रूबल के उसके वेतन को काफी और अच्छा समझते हैं। अकेला वही जानता था कि इस अन्याय ने, पत्नी की लगातार बौखलाहट ने और उस कर्जे ने, जिसे कि अपने साधनों से ज्यादा खर्चा करके उसने अपने ऊपर लाद लिया था, उसकी स्थिति अत्यंत साधारण कर दी थी।

गर्मियों में रुपया बचाने के इरादे से उसने छुट्टियाँ लीं और पत्नी के साथ उसके भाई के यहाँ रहने के लिये गाँव चला गया।

गाँव में बिना किसी काम के भी, जीवन में पहली बार, उसने कमजोरी महसूस की। उसे परेशानी ही नहीं वरन् असह्य निराशा हुई, और उसे पता लगा कि इस तरह जीवित रहना असम्भव है; और यह कि उसे दूसरे उपाय काम में लाने चाहिए।

इधर-उधर बरामदे में ही टहलते हुए, आँखों में ही एक रात गुजारने के बाद, उसने पीटसबर्ग जाने का निश्चय किया ताकि वह उन लोगों को दण्ड दे सके जो उसका समर्थन करने में विफल हुए थे और साथ ही किसी और विभाग में अपनी बदली भी करा सके।

दूसरे दिन अपनी पत्नी के विरोधों के बावजूद, कम से कम पाँच हज़ार रूबल प्रतिवर्ष के वेतन का पद प्राप्त करने के इरादे से वह पीटसबर्ग को रवाना हो गया। किसी खास विभाग या काम की ओर उसका झुकाव न था। वह तो केवल पाँच हजार रूबल के वेतन वाले किसी भी पद पर अपनी नियुक्ति चाहता था। वह शासन में हो, बैंक में, रेलरोड विभाग में, रानी मेरिया के शिक्षा-विभाग में या आयात-निर्यात या कर विभाग में—लेकिन इसके लिये पाँच हज़ार रूबल का वेतन होना और पद का उस विभाग के अलावा, जिसमें उसका समर्थन नहीं हुआ था, किसी और विभाग में होना आवश्यक था।

नये पद की खोज में उसे आकस्मिक और महत्वपूर्ण सफलता मिली। कुर्स्क में उसका एक परिचित, इलियन, पहले दर्जे के डिब्बे में उसके समीप बैठा मिल गया। उसने बताया कि कुर्स्क के गवर्नर ने अभी-अभी एक तार भेजा है और ऐलान किया है शासन-विभाग में एक परिवर्त्तन हो रहा है और इवान सेमीनोविच को पीटर इवानोविच की जगह दी जाने वाली है।

इस प्रस्तावित परिवर्त्तन का रूस के लिये महत्व था। पर इवान इलिच के लिए भी इस अवसर का एक खास महत्व था क्योंकि इससे उसे एक नया

पद मिलने जा रहा था। सब कुछ इवान इलिच के पक्ष में ही हो रहा था।

ज़ाचार इवानोविच उसका एक मित्र और सहकारी था। मास्को में जब यह खबर पक्की हो गई तो पीटसबर्ग पहुँचने पर वह ज़ाचार इवानोविच से मिला। उससे एक पक्का वायदा करा लिया कि उसे न्याय विभाग में एक पद मिल जायगा।

एक सप्ताह पश्चात् उसने अपनी पत्नी को तार दिया, 'जाचार मिलार के पद पर नियुक्ति।'

धन्यवाद है इस परिवर्त्तन के लिये! इवान इलिच की नियुक्त अकस्मात ही इस पहले वाले विभाग में हो गई और वह अपने पिछले साथियों से दो पद आगे पहुँच गया। साथ ही आने-जाने के खर्चे के लिए साढ़े तीन हजार रूबल के अलावा उसे पाँच हजार रूबल का वेतन भी मिलने लगा। पिछले शत्रुओं और सम्पूर्ण विभाग के प्रति उसका सारा चिढ़चिड़ापन हवा हो गया। इवान इलिच बिल्कुल सुखी दीखने लगा।

जितना खुश वह पहले था उससे अधिक संतुष्ट होकर वह गाँव लौटा। प्रास्कोव्या फैडोरोवना भी खुश हुई और उन दोनों में एक समझौता हो गया। इवान इलिच ने बताया कि किस प्रकार पीटसबर्ग में उसकी आवभगत की गई और उसके दुश्मनों को शर्मिन्दा होना पड़ा, कितनी जलन उन्हें उसकी नियुक्ति से हुई और पीटसबर्ग में किस तरह सब उसे चाहते हैं।

प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने इसे सुना, और लगा कि वह इस पर विश्वास कर रही है। उसने किसी बात का विरोध नहीं किया, बल्कि केवल भविष्य में उस नगर में रहने के लिये, जहाँ कि वे जा रहे थे, प्लान बनाने लगी। इवान इलिच ने खुशी से देखा कि ये प्लान उसके प्लान थे, यह कि उसकी पत्नी उससे एकमत है और यह कि इतना लड़खड़ाने के बाद उसके जीवन की नौका अब सम्हलने लगी है।

गाँव वह कुछ समय के लिए ही आया था क्योंकि दस सितम्बर को उसे अपना कार्यभार सँभालना था। इसके अलावा नये स्थान में जमने के लिए, अपना सारा सामान वहाँ ले जाने के लिये और दूसरी कई चीजें खरीदने के लिये उसे समय की जरूरत थी। संक्षेप में वे सब तैयारियाँ करने के लिये जिसका कि प्रास्कोव्या फैडोरोवना और उसने इरादा किया था।

अब प्रत्येक बात उसकी इच्छानुसार हो गई थी। उसकी पत्नी के और उसके उद्देश्य एक थे। वे अपने विवाहित जीवन के प्रथम वर्ष की अपेक्षा अच्छी तरह रहने लगे। इवान इलिच का विचार था कि तभी वह पत्नी और परिवार को अपने साथ ले जाता किन्तु उसके साले और साले की पत्नी के जोर देने पर, जो अकस्मात ही उनके प्रति इतने खिंच गये थे, उसे अकेले ही जाना पड़ा।

इस प्रकार वह रवाना हुआ। जीवन में सफलता तथा उसके प्रति पत्नी के अच्छे व्यवहार ने जो हर्ष और उल्लास दिया था, वह कम न हुआ। उसे एक बढ़िया मकान मिल गया। जैसाकि वह और उसकी पत्नी ने कल्पना की थी—विशाल, पुरानी शैली के बने ऊँचे स्वागत कक्ष, सुविधाजनक और अच्छा अध्ययन-कक्ष, पत्नी और बेटी के लिये कमरे, लड़के के लिये अध्ययन कक्ष—मानों उन्हीं के लिये उसका निर्माण हुआ हो। इवान इलिच ने स्वयं सब तैयारियाँ कीं और मकान को सजाया। हर एक चीज में तरक्की होती गई, यहाँ तक कि वह उसके काल्पनिक आदर्शों के समीप पहुँच गई। उसने देखा कि जब सब कुछ हो चुकेगा तब वह कितना आदर्श होगा—और कितना ऊँचा होगा उनका स्तर!

बिस्तरे पर लेट जाने पर उसने कल्पना की कि स्वागत कक्ष किस प्रकार का लगेगा। ड्राइंग रूम की सारी चीजें अभी अस्तव्यस्त पड़ी थीं। पर स्क्रीन, कुर्सियाँ, रकाबियाँ, प्लेट, सभी ठीक से अपने-अपने स्थान पर रख दी जाने के बाद कैसी लगेंगी, यह वह सोच रहा था। वह इस ख्याल से बहुत प्रसन्न था कि उसकी पत्नी और बेटी, जो इन सब

चातों में उसकी सी ही रुचि रखती थीं, इस सब से बहुत प्रभावित होगीं। इतना अधिक हो सकेगा, ऐसी आशा न थी। सस्ती पुरानी ऐतिहासिक वस्तुएँ खरीदने में उसे खासतौर से सफलता मिली थी, जिससे कि सारा वातावरण ही प्राचीनता के आवरण में छिपा हुआ सा जान पड़ता था। किन्तु उसने जान बूझ कर अपने पत्रों में किसी भी वस्तु का उल्लेख नहीं किया, ताकि वह उन्हें आश्चर्यान्वित कर सके। इन सब कामों में वह इतना खो सा गया कि उसके नए कर्त्तव्य भी—यद्यपि वह सरकारी काम पसन्द करता था—उसमें उससे भी कम दिलचस्पी पैदा कर सके, जितनी कि उसे उम्मीद थी। कभी-कभी अपने सरकारी कामों के बीच भी उसे इन सब का ख्याल होता और वह सोचने लगता कि उसके घर के पर्दों के सिरे सीधे होने चाहिए या घुमावदार। कभी-कभी वह इन सब में इतनी दिलचस्पी लेता कि खुद फर्नीचर ठीक करता या पर्दे लटकाता। एक बार, जबकि कारीगर को समझाने के लिए वह सीढ़ी पर चढ़ रहा था, उसका क़दम गलत पड़ गया और वह गिर गया, पर एक मजबूत स्वस्थ आदमी होने के कारण उसने स्वयं को संभाल लिया और खिड़की की चौखट से उसकी कुहनी सिर्फ छिल कर रह गई। छिली हुई जगह में दर्द होने लगा पर वह दर्द शीघ्र ही बन्द हो गया और तभी उसने फुर्ती-सी महसूस की। उसने लिखा था—"मैं पन्द्रह वर्ष छोटा हो गया हूँ।" उसका विचार था कि सितम्बर तक सब कुछ ठीक हो जायेगा। पर यह सब बखेड़ा मध्य अक्टूबर तक चलता रहा। इसका नतीजा उसकी निगाहों को, और जिस किसी ने देखा उसकी निगाहों को भी, आकर्षक ही लगा।

वस्तुतः यह सब वैसा ही था जैसा कि मध्यम आय वाले लोगों के मकानों में देखा जाता है। वे ऊपरी दिखावे से काफी धनी लगते हैं, पर होते हैं अपने जैसे दूसरों की तरह ही। इलिच के मकान में कुर्सियाँ थीं, तस्वीरें थीं, पीतल के शो केश थे—सभी चीजें जोकि खास वर्ग के लोग अपने ही वर्ग के अन्य लोगों से तुलना करने के लिए रखते

हैं। उसका मकान औरों की तरह इतना साधारण था कि किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं गया, यद्यपि उसे स्वयं यह बड़ा असाधारण लगा। जब वह अपने परिवार से स्टेशन पर मिलने गया तो वह बड़ा ही खुश हुआ और सबको इस नए मकान में ले आया। मकान बिजली से जगमगा रहा था और दरवाजे पर सफेद दाढ़ी पहिने एक दरवान खड़ा था। उसने गुलदस्तों से सजे हुए हाल का दरवाज़ा खोला। जब वे उसके ड्राइंग रूम और फिर अध्ययन कक्ष में पहुँचे तो उसके चेहरे पर खुशी के भाव छलक आए। इन सब वस्तुओं की तारीफ़ करते-करते वह उन्हें बहुत दूर ले गया और उसका चेहरा खुशी से चमक उठा। शाम को चाय के समय बहुत-सी दूसरी बातों के दौरान में ही जब प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने उससे पूछा कि आखिर वह गिर कैसे गया, तो वह हँसा और फिर बताया कि किस प्रकार सीढ़ियों पर चढ़ कर उसने कारीगर को आतंकित कर दिया था।

"अच्छा ही है कि मैं एक पहलवान की तरह मजबूत हूँ। दूसरा आदमी होता तो मर जाता। लेकिन मैं सिर्फ घायल हो गया। ठीक यहाँ जब आप इसे छूती हैं तब इसमें तकलीफ होती है, नहीं तो कोई बात नहीं। यह सिर्फ एक घाव है।

इस प्रकार उन्होंने अपने नए मकान में रहना शुरू कर दिया और जैसा हमेशा होता है जब वे पूरी तरह बस गये तो उन्होंने अनुभव किया कि एक कमरे की कमी है। उनकी बढ़ी हुई आमदनी में भी लगभग पाँच सौ रूबल की कमी मालूम पड़ी, पर जैसे-तैसे गाड़ी चलने लगी।

शुरू में तो, जब तक कि सभी चीजें बिल्कुल ठीक से नहीं रख दी गईं, जैसे-तैसे काम चला। इसे खरीदना, उसे हटाना, उसे मरम्मत करना आदि। यद्यपि पति-पत्नी में मतभेद हो जाता, था वे इतने अधिक सन्तुष्ट थे, और करने के लिए इतना अधिक काम था कि कोई झगड़े की नौबत न आती। जब कोई चीज ठीक करने के लिए न होती तो

जान पड़ता कि किसी बात की कमी रह गई है किन्तु फिर भी जीवन पूर्णता की ओर प्रगति करने लगा।

इवान इलिच सुबह का समय कचहरी में बिताता और भोजन के समय घर आता। शुरू में वह हँसमुख रहता था, हलाँकि वह प्रायः चिड़-चिड़ा हो जाता था, मुख्य कर घर के कारण। मेज़पोश पर हल्के से दाग़ को, या खिड़की के डोरे को टूटा हुआ देख कर ही वह चिड़-चिड़ा हो जाता। उसने हरएक चीज़ को सजाने में इतना अधिक समय लगाया था कि ज़रा सी गड़-बड़ भी उसे परेशान कर देती। किन्तु साधारण तौर से उसकी ज़िन्दगी की गाड़ी ऐसी ही चल रही थी जैसाकि वह चलाना चाहता था—आराम से, आनन्द से और शान-शौकत से।

वह नौ बजे उठता, काफ़ी पीता, अख़बार पढ़ता और फिर कपड़े पहिन कर कचहरी चला जाता। वहाँ का दैनिक कार्य्य-चक्र उसके काफी अनुकूल बना दिया गया था और वह बिना संकोच के उसे पूरा करता; प्रार्थी, चान्सरी, पूँछ ताँछ, खजाना, मुकदमे, और अन्य शासन सम्बन्धी काम। इनमें सबसे बड़ी बात थी जनता के साथ केवल सरकारी सम्बन्धों को ही स्वीकार करना, और वह भी सरकारी आधार पर ही। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति कुछ पूँछने के लिए आता तो इवान इलिच, यह कार्य्य उसके क्षेत्र के अन्तर्गत न होने से, साफ मना कर देता। लेकिन किसी का सरकारी तौर पर उससे कोई काम होता, कोई ऐसी चीज़ जिसे टिकट लगाये हुए सरकारी कागज पर दिखाया जा सके, तो वह अपनी सामर्थ्यानुसार सरकारी सम्बन्धों की सीमा में रहते हुए उसके लिए सब कुछ करता और ऐसा करने में वह उसके साथ मानवोचित व्यवहार भी रखता। सरकारी काम खत्म होते ही उसका सम्बंध भी उससे कुछ न रहता।

इवान इलिच में सरकारी कामों को अपने व्यक्तिगत जीवन से

अलग रखने की असाधारण और ऊँचे दर्जे की क्षमता थी और एक कलाविज्ञ की तरह लम्बे अभ्यास और स्वाभाविक योग्यता से, वह इस क्षमता को इस सीमा तक ले गया था कि सामाजिक और सरकारी कामों को कभी-कभी एक कर देता था। वह ऐसा इसीलिए होने देता था क्योंकि जानता था कि वह जब भी चाहे सामाजिक सम्बन्धों को दूर कर देगा और फिर कड़ा सरकारी दृष्टि-कोण अपना लेगा। सब काम वह आराम-आराम से, ठीक से और यहाँ तक कि कलापूर्ण ढंग से करता। खाली समय में वह सिगरेटें उड़ाता, चाय पीता, राजनीति, ताश या किसी अन्य विषय पर गप्पें लड़ाता, लेकिन सबसे ज्यादा बोलता सरकारी नियुक्तियों के बारे में ही। थके होने पर भी घर लौटने पर उसमें एक कलाविज्ञ का उत्साह होता। उसे पता लगता कि उसकी पत्नी और बेटी किसी से मिलने गई हैं, एक मेहमान आया हुआ है, उसका बेटा स्कूल गया है, उसने घर के लिए दिया हुआ सारा स्कूल का काम कर लिया है या जो कुछ भी स्कूल में पढ़ा था याद कर रहा है। सब कुछ वैसा ही होता जैसा कि होना चाहिए।

भोजन के उपरान्त यदि कोई मेहमान न होता तो इवान इलिच कोई ऐसी पुस्तक पढ़ता, जिसकी सामाजिक चर्चा हो रही हो और फिर काम में लग जाता—अर्थात् वह सरकारी अखबार पढ़ता, गवाहों के उत्तरों का मिलान करता और उनसे सम्बंधित कानून के परिच्छेद पढ़ता। न तो उसे यह बुरा ही लगता और न अधिक मनोरंजक ही। जब वह ब्रिज खेलता होता तब जरूर उसे यह काम बुरा लगता। पर जब ब्रिज न होती तो बेकार या पत्नी के पास बैठने की अपेक्षा यह अच्छा ही लगता। उसका सबसे पसन्द मनोरंजन था दावतें देना, जिनमें वह समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों और औरतों, सभी को, निमन्त्रित करता जिस तरह उसका ड्राइंग रूम और दूसरे ड्राइंग रूमों से मिलता जुलता था, उसी प्रकार उसकी दावतें भी अन्य दावतों से मिलती-जुलती थीं। उनमे कोई विशेषता न थी।

एक बार तो उस एक नृत्य का भी आयोजन किया। उसे इसमें आनन्द आया, सिवाय इसके कि केक और मिठाइयों के विषय को लेकर उसका अपनी पत्नी से झगड़ा हो गया। प्रास्कोव्या फैडोरोव्ना ने खुद हिसाब लगाया था पर इवान इलिच ने हर एक चीज एक मंहगे हलवाई से खरीदने पर जोर दिया था और बहुत ज्यादा केक मंगाने का आर्डर दे दिया था। झगड़ा इस कारण हुआ था कि कुछ केक बाकी बच रहीं थीं और हलवाई का बिल पैंतालिस रूबल का बैठा था। यह एक बड़ा मजाक था। प्रास्कोव्या फैडोरोव्ना ने उसे बेवकूफ़ कहकर पुकारा और गुस्से में तलाक की धमकी दी।

लेकिन नृत्य काफी मनोरञ्जक रहा, अच्छे से अच्छे लोग इसमें शामिल हुए और इवान इलिच 'जीवन का भार' नामक संस्था के संस्थापक की बहिन राजकुमारी 'ट्रूफोनोवा' के साथ नाचा।

अपये कार्य्य में उसे जो आनन्द मिलता था वह सब अपनी महत्वाकाँक्षा के कारण; और उसके सामाजिक सम्बन्धों के पीछे भी उसका अभिमान ही था; पर उसका सबसे बड़ा मनोरञ्जन तो ब्रिज खेलना था। वह स्वीकार करता था कि उसके जीवन में कोई भी अरुचिकर घटना क्यों न हुई हो, सबसे अधिक आनन्द जो एक प्रकाश की किरण की तरह चमकता था, अच्छे खिलाड़ियों के साथ ब्रिज खेलने के लिए बैठना था; और वह भी चार खिलाड़ियों के साथ ही। ब्रिज के खेल के बाद यदि वह कुछ जीत लेता, यद्यपि अधिक जीतना अच्छा मालूम न देता, तो खुशी-खुशी सोने के लिए बिस्तरे पर जाता। इस प्रकार जीवन चलता रहा। उच्च वर्ग के लोगों में से उसने कुछ परिचित बना लिये थे और महत्वपूर्ण व्यक्ति उससे मिलने आते थे।

परिचितों के विषय में पति, पत्नी और पुत्री तीनों के ख्यालों में कोई मतभेद न था। एकमत होकर वे उन हल्की स्थिति के लोगों से दूर रहते थे, जो अत्यधिक स्नेह जताते हुए, उनके ड्राइंग रूम में बिना बुलाये मेहमानों की तरह घुसे ही आते थे। शीघ्र ही इन हल्की स्थिति

के दोस्तों ने आना-जाना छोड़ दिया और गोलोविन के परिवार में केवल ऊँची स्थिति के लोग ही आने लगे।

निरीक्षक न्यायाधीश, लीशा पैट्रिस्चीव, औरअपने मित्री पैट्रिस्चीव के बेटे एवं इसके पूर्ण उत्तराधिकारी श्वानोविच की ओर उसने इतना ध्यान दिया कि इवान इलिच ने प्रास्कोव्या फैडोरोव्ना से एक बार बात भी की और इस पर विचार किया कि उन्हें कोई दावत दी जानी चाहिये या नहीं, या किसी नाटक का प्रबन्ध करना चाहिये।

इसी प्रकार दिन बीतते गये। उनके जीवन में कोई परिवर्त्तन या विशेष प्रवाह हो ऐसा आभास नहीं होता था।

[४]

उन सबका स्वास्थ्य अच्छा था। इवान इलिच कभी-कभी शिकायत करता था कि उसके मुँह का स्वाद कड़वा हो गया है, या वह कुछ बेचेनी अनुभव करता है, पर इसे तन्दुरुस्ती की खराबी नहीं कहा जा सकता।

यह बेचेनी बढ़ती ही गई और यद्यपि दर्द इतना अधिक नहीं होता था, इससे एक तरफ कुछ भारीपन-सा रहने लगा और कुछ स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया। यह चिड़चिड़ापन बढ़ता ही गया और इसने गँलोविन परिवार में जो शान्ति और औचित्य था जो स्वाभाविकता कायम हो गई थी उसे नष्ट कर दिया। पति-पत्नी में बार-बार झगड़े होने लगे और विश्राम तथा शान्ति गायब होगई। यहाँ तक कि शान-शौकत भी नहीं रखी जाने लगी। ऐसे कम अवसर आते जबकि पति-पत्नी के बीच बवंडर खड़ा न हो। प्रास्कोव्या फैडोरोवना के पास अब यह कहने के लिये बहुत से कारण थे कि उसके पति का स्वभाव सहनशील नहीं है। यह बात वह बढ़ा-चढ़ा कर कहा करती थी कि उसका स्वभाव भयानक है, और यह कि उसके साथ बीस वर्ष बिताने में अच्छे स्वभाव का होना जरूरी नहीं है। यह सच था कि अब झगड़े इवान के द्वारा शुरू किये जाते थे। उसके स्वभाव में बौखलाहट प्रायः भोजन के पहले ही शुरू हो जाती यदि वह देखता कि प्लेट या रकाबी टूट गई है, या भोजन ठीक नहीं बना है, या उसके बेटे ने अपनी घुटनी मेज पर टेक दी है, या उसकी बेटी ने वैसे बाल नहीं काढ़े हैं जैसे कि वह पसन्द करता है तो इन सब के लिए वह प्रास्कोव्या फैडोरोवना को बुरा-भला कहता।

शुरू में वह इन सबका जबाव दे दिया करती और कुछ अरुचिकर बातें कह देती, किन्तु भोजन के पहले एक दो दिन वह इतना अधिक क्रोधित हो गया कि वह जान गई कि यह भोजन से उत्पन्न किसी शारीरिक कमजोरी के कारण है, और इसलिये उसने खुद को रोक लिया और उत्तर नहीं दिया, बल्कि सिर्फ यह कोशिश की कि भोजन शीघ्र हो जाय। वह इस आत्म-संयम को बहुत ही प्रशंसा के योग्य समझती, इस निष्कर्ष पर पहुँच जाने के बाद कि उसके पति का स्वभाव भयानक रूप से चिड़चिड़ा था, और उसने उसके जीवन को दुखित बना दिया था, उसने अपने लिये अफसोस करना शुरू कर दिया। और जितना कि वह स्वयं पर हमदर्दी दिखाती उतना ही वह अपने पति से नफरत करती। वह इच्छा करती कि वह मर जाये, तो भी उसकी मृत्यु वह चाहती न थी क्योंकि तब उसका वेतन बन्द हो जाता। और यह उसे और भी अधिक चिड़चिड़ा बना देता। वह अपने को भयानक रूप से दुःखी अनुभव करती क्योंकि उसकी मृत्यु से भी उसकी मुक्ति संभव नहीं। वह अपनी उत्तेजना को दबाती, उसकी यह छिपी हुई उत्तेजता जिसने उसके चिड़चिड़े पन को और भी बढ़ा दिया।

एक अवसर पर तो उसका व्यवहार खास तौर से अनुचित रहा। लेकिन यह सब उसके अस्वस्थ होने की वजह से था। उसकी राय थी कि सचमुच में उसकी तीमारदारी की जानी चाहिए और उसे किसी अच्छे डाक्टर को दिखाना चाहिए।

वह डाक्टर के यहाँ गया, प्रत्येक बात वैसे ही हुई जैसी कि आशा की जाती है। औरों की तरह प्रतीक्षा करना, डाक्टर का अभिमान, जिन सबके साथ वह इतना अधिक परिचित था, और डाक्टर के द्वारा पूछे गए प्रश्न जिनके कि निष्कर्ष पहले से ही निश्चित थे और जो स्पष्टतया अनावश्यक थे। फिर बड़प्पन की वह नज़र जो कहती थी—"अगर सिर्फ आप अपने को हमारे ऊपर छोड़ दें तो सब कुछ ठीक हो जायगा। हम जानते हैं कि बीमारी क्या है।' हमेशा सबके लिए एक ही ढंग में यह ठीक उसी.

प्रकार था जैसा कि कचहरी में। डाक्टर ने उसके प्रति ऐसा ही वर्त्ताव किया जैसा कि वह खुद किसी अभियुक्त के साथ करता।

डाक्टर ने उसके शरीर में होने वाली अनेक प्रक्रियाओं की ओर संकेत किया, लेकिन उसे सन्तोष नहीं हुआ। इवान इलिच के लिये केवल एक प्रश्न महत्त्वपूर्ण था, उसका मामला गम्भीर था या नहीं। पर डाक्टर ने उसके इस अनुपयुक्त प्रश्न की उपेक्षा की। उसके दृष्टिकोण से यह एक आवश्यक बात न थी। वास्तविक प्रश्न तो यह था कि यह गुर्दे की बीमारी थी या एपैन्डैसाइटिस। यह इवान इलिच के मृत्यु अथवा जीवन का प्रश्न था। और इवान इलिच को लगा कि एपैन्डैसाइटिस का उल्लेख करके डाक्टर ने यह प्रश्न बड़ी ही बुद्धिमत्तापूर्वक हल कर दिया है। उसने बताया कि पेशाब के निरीक्षण से कोई ताजा संकेत मिला तो इस बात पर फिर विचार किया जायगा। यह बिल्कुल उसी प्रकार से था जैसा कि अभियुक्तों से व्यवहार करते समय इवान इलिच ने खुद हजारों बार किया था। डाक्टर ने भी एक विजयी की भाँति चेहरे पर एक फीकी-सी मुस्कराहट ला इस अभियुक्त की बात खत्म की।

डा० की बात से इवान इलिच ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसकी दशा चिन्ताजनक है। पर डाक्टर के लिये, और शायद हर किसी के लिये, यह एक महत्त्वहीन बात है। और उसे इस निष्कर्ष से बहुत पीड़ा हुई, और स्वयं के प्रति एक सहानुभूति भी। इतने महत्त्व की बात की ओर डाक्टर की उदासीनता ने उसमें कड़वाहट पैदा कर दी।

उसने कुछ कहा नहीं, पर वह उठा, मेज पर उसने डा० की फीस रख दी, और एक दुख-भरी आवाज से पूछा, "हम बीमार लोग कभी-कभी अनुपयुक्त प्रश्न पूछ लेते हैं, पर मुझे बताइए कि साधारण रूप से लक्षण खतरनाक हैं?"

डा० ने रुखाई से चश्मे में से एक आँख से उसकी ओर देखा मानो कहने के लिये :

"बन्दी, अगर तुम पूछे हुये प्रश्न का जवाब नहीं दोगे, तो मैं तुम्हें कचहरी से निकालने के लिये मजबूर हो जाऊँगा।

लेकिन उसने कहा :

मैं जो कुछ भी आवश्यक और ठीक समझता हूँ, पहले ही कह चुका हूँ। निरीक्षण के बाद कुछ और बातें मालूम हो सकती हैं।

इवान इलिच धीरे से बाहर निकला, असन्तुष्ट-सा वह सवारी में बैठा, और घर चला गया। रास्ते-भर वह उन बातों पर विचार करता रहा जो कि डाक्टर ने कहीं थीं, और उन उलझे हुये वैज्ञानिक शब्दों का सरल भाषा में अर्थ समझने की कोशिश करता रहा। उनमें अपने इस प्रश्न का उत्तर ढूँढता रहा। क्या मेरी दशा खराब है? क्या यह बहुत ज्यादा खराब है? या अभी ऐसी कोई बुरी बात नहीं हुई है। और उसे लगा कि डाक्टर ने जो कुछ कहा था उसका अर्थ यही था कि उसकी दशा अत्यन्त चिंताजनक है। जीवन के भौतिक आनन्द उसके लिये व्यर्थ थे। सड़क की प्रत्येक चीज़---ड्राइवर, मकान, राहगीर, दुकानें सब कुछ उसे धुँधली दिखाई देती थीं। उसका क्रमशः बढ़ता हुआ दर्द डाक्टर के निर्णय के बाद और भी गम्भीर तथा महत्त्वपूर्ण जान पड़ने लगा। इवान इलिच में इस दर्द को सहन करने की और अधिक सामर्थ्य न थी।

घर पहुँचने पर उसने सारा हाल अपनी पत्नी प्रास्कोव्या फैडोरोवना को बताया। उसकी पत्नी ने अन्यमनस्कता से उसकी बात सुनी तो सही, पर इसी बीच में माँ के साथ बाहर जाने के लिये तैयार होकर उनकी बेटी आ गई। वह भी इस दर्द-भरी कहानी को सुनने के लिये चुपचाप एक ओर बैठ गई।

फैडोरोवना ने बेरुखी से कहा—"मुझे बहुत खुशी है कि तुम डा० के यहाँ गये। अब ठीक से इलाज करवाओ और नियमित रूप से दवा लो। पर्चा दे दो। मैं जैरासिम को कैमिस्ट की दुकान पर भेज दूँगी। ठीक है न?" और वह बाहर जाने के लिये तैयार हो गई।

कमरे में उसका दम-सा घुट रहा था। बाहर जाते ही खुली ताज़ी हवा में उसने एक गहरी साँस ली, और ताज़गी महसूस की।

"फैडोरोवना ठीक ही कहती है। आखिर इसमें बुराई भी क्या है! दवा तो उसे लेनी ही चाहिए।" इवान इलिच ने सोचा।

इसके बाद उसने नियमित रूप से दवा लेना और डाक्टर की हिदायतों पर अमल करना शुरू कर दिया। डाक्टर ने उसके पेशाब की जाँच की। इस जाँच के बाद डाक्टर को अपनी राय बदल देनी पड़ी। और दवा लेने के बन्धन और नियम भी पहले की अपेक्षा अधिक जटिल हो गये।

इवान इलिच का मुख्य काम अपने शरीर की देख-भाल करना और डाक्टरों के आदेशों का पालन करना हो गया। दूसरे लोगों के स्वास्थ्य और बीमारी में उसकी दिलचस्पी बढ़ गई। यदि उसकी उपस्थिति में किसी की बीमारी और फिर अच्छे होने की बात उठती तो वह इसे बड़ी उत्सुकता से सुनता। इस उत्सुकता को कोशिश करने पर भी छिपाना सम्भव न था। यही नहीं, बीमारी के सम्बन्ध में वह अनेक प्रश्न भी पूछता और उन्हें अपने हाल पर लागू करता।

दर्द कम नहीं हुआ। पर इवान इलिच ने यह सोचने का प्रयास किया कि वह पहले से अच्छा हो रहा है। यदि उसका जीवन-क्रम औसत रूप से चलता रहता तो वह लगातार अच्छे होने के इस भुलावे में रह सकता था। लेकिन पत्नी के साथ कोई मनमुटाव होने पर, सरकारी काम में सफलता न मिलने पर या ब्रिज में हार जाने पर उसे फिर अपनी बीमारी का ख्याल हो आता। उसकी बीमारी और भी ज्यादा बढ़ती हुई सी दिखाई देती। वह सोचता—दवा ने अपना असर दिखाया ही था और मेरी बीमारी ठीक होने लगी थी कि यह उलझन पैदा हो गई। मेरे पास रोज़-रोज़ के इस क्लेश को रोकने का कोई उपाय नहीं है।

"पारिवारिक अशान्ति ने उसकी बीमारी को बढ़ा दिया है। इसलिए उसे घर में होने वाली सभी अरुचिकर घटनाओं की उपेक्षा करनी चाहिए।" 'उसे शान्ति की जरूरत है'। वह ख्याल करता। पर खुद ऐसी बातें पैदा कर देता कि स्थिति पहले से ज्यादा बिगड़ जाती।

वह प्रत्येक बात में मीन-मेख निकालता और ज़रा-ज़रा सी बात पर बिगड़ पड़ता। वह जानता था कि उसकी बीमारी नियमित रूप से, बिना नागा किए, बढ़ रही है। मृत्यु के वीभत्स पंजे उसकी गर्दन को दबोच रहे हैं। और वह असहाय है, मजबूर है।

इवान इलिच एक नये डाक्टर से मिलने गया। पर इसने जो कुछ भी बताया, उसमें कुछ भी नवीन न था। उसका डर या सन्देह बजाय कम होने के और बढ़ ही गया। फिर वह अपने एक दोस्त के पास गया और इस दोस्त ने, जो स्वयं एक बहुत योग्य डाक्टर था, बिल्कुल दूसरे ही ढंग से उसकी बीमारी की जाँच-पड़ताल की। उसके प्रश्नों और बात करने के ढंग ने भी इवान को काफी परेशान किया।

इवान इलिच को अब भी सन्तोष न हुआ। वह एक होम्योपैथिक डाक्टर से मिला। इस डाक्टर ने उसकी बीमारी को और भी विचित्र रूप से देखा और दवा बताई। इवान इलिच ने बिना किसी को बताये एक माह तक इसका इलाज किया। फिर कुछ भी लाभ न देख कर इस प्रकार के डाक्टरों के इलाज से उसका विश्वास उठ गया।

एक दिन उसने एक परिचित महिला से अपनी बीमारी के सम्बन्ध में बातचीत की। इस महिला ने उसे कुछ ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह जादू-टोनों में विश्वास करने लगा। और वह उन लोगों की फिराक में रहने लगा, जो जादू-टोने और भूत-प्रेत से इलाज करते हैं। फिर भी कभी-कभी उसे ख्याल आता—

"क्या मेरा दिमाग़ इस सीमा तक कमज़ोर हो गया है? नहीं, यह सब बेवकूफी है। मुझे एसी कमजोरी को अपने मन में स्थान नहीं देना

चाहिए। बल्कि ठीक से किसी डाक्टर का इलाज करना चाहिए। हाँ, यही ठीक है।"

कहना आसान था, पर करना कठिन। दर्द बढ़ता ही जा रहा था। उसके मुँह का स्वाद भी अरुचिकर होता जा रहा था। उसकी साँस में भी दुर्गन्ध आने लगी। भूख और शक्ति कम हो गई। नाड़ी धीमें चलने लगी। एक ऐसी विचित्र सी प्रक्रिया उसके शरीर में होने लगी जिसका उसने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था।

इसका ज्ञान केवल उसे ही था; उसके आसपास के लोग इसे नहीं समझते थे या समझना नहीं चाहते थे। और सोचते थे कि संसार में सब कुछ ठीक ही चल रहा है। इसने इवान इलिच को और भी परेशान कर दिया। उसने देखा कि उसकी गृहस्थी, खास तौर से उसकी पत्नी और लड़की, जो उसे प्रायः देखते ही रहते, यह सब नहीं समझते थे, और यह देखकर कि वह इतना निराश और एकान्त प्रिय है काफी अन्यमनस्क से रहते हैं, मानों इसके लिये वह स्वयं दोषी है!

यद्यपि उन सब ने इसे छिपाने की कोशिश की, इवान इलिच ने देखा कि वह उनके रास्ते का रोड़ा था; और उसकी पत्नी ने उसकी बीमारी के सम्बन्ध में एक निश्चित धारणा बना ली है और वह कुछ भी करे या कहे, उसकी यह धारणा अटल है। उसकी पत्नी का दृष्टिकोण यह—था "आप जानते हैं" वह अपने दोस्तों से कहती, "इवान इलिच और लोगों की तरह नहीं चलते; न बताये हुए आदेशों का ही पालन करते हैं। एक दिन तो वे अपनी खुराक लेंगे, ठीक से अपना खाना खायेंगे और समय पर सोने के लिये जायेंगे, लेकिन दूसरे ही दिन, यदि मैं उन्हें नहीं देखूँ तो वे अकस्मात अपनी दवा भूल जायेंगे, और रात के एक बजे तक ताश खेलते रहेंगे।"

"कब हुआ यह?" इवान इलिच घबड़ा कर पूँछता, "केवल एक बार, पीटर इवानोविच के यहाँ।"

"और कल; शैबिक के साथ ?"

"ठीक है, अगर मैं न भी जगता तो यह दर्द मुझे जगाये रखता।"

"ठीक है, जैसा भी है; तुम इस तरह कभी ठीक न होगे, और हमें हमेशा परेशान करते रहोगे।"

प्रास्कोव्या फैडोरोवना का इवान इलिच की बीमारी के प्रति दृष्टिकोण, जैसा कि वह दूसरों के सामने या उसके सामने व्यक्त करती थी, यह था कि इलिच की बीमारी स्वयं उसकी गलती से ही थी, और इस वजह से उसने औरों के लिए भी परेशानियाँ पैदा कर दी थीं। इवान इलिच को लगा कि यह राय अनजाने ही उसने व्यक्त कर दी है पर इससे उसे कोई चैन न मिला।

कचहरी में भी उसने देखा, था उसे लगा, कि सबका उसकी ओर एक विचित्र दृष्टिकोण हो गया है। कभी-कभी उसको लगता कि लोग उसकी ओर जिज्ञासा से देख रहे हैं, मानो उसकी जगह शीघ्र ही खाली होने वाली हो। उसके मित्र, अचानक ही, मित्रतापूर्ण ढंग से उसकी कमजोरी के बारे में उसे कुरेदना शुरू कर देते, मानो उसके अन्दर होने वाली अरुचिकर प्रक्रियायें, जोकि उसे लगातार सता रही हैं और बिना किसी रोकटोक के उसे झकझोर रही हैं, उनके लिये हँसी-मज़ाक का एक रुचिकर विषय हो। विशेषकर श्वार्ज़ उसे अपनी चतुरता, हाजिर-जवाबी और मज़ाकियेपन से तंग करता और इससे उसे स्मरण हो आता कि वह खुद दस वर्ष पहले क्या था।

दोस्त आते और ताश खेलने बैठ जाते। बाजी खूब जमती। पर अचानक ही इवान इलिच अपने कष्टकर दर्द से तड़प उठता; मुँह का स्वाद बिगड़ जाता और फिर उसके लिए ताश खेलना असम्भव हो जाता।

वह अपने साथी मिकाइल मिकाइलोविच की ओर देखता, जो

अपने मजबूत हाथों से मेज खटखटाता था, और बजाय चाल चलने के बड़ी सभ्यता और होशियारी से इवान इलिच की ओर पत्ते सरका देता जिससे कि वह बिना अपने हाथों को फैलाने का कष्ट किए, उन्हें उठा सके। "क्या वह समझता है कि मैं इतना कमजोर हूँ कि अपने हाथ भी नहीं बढ़ा सकता!" इवान इलिच ने सोचा। और यह भूलते हुए कि वह क्या कर रहा है, वह अपने साथी के हाथ पर ही तुरुफ लगा देता, और तीन पत्तों से बाजी हार जाता। मिकाइल मिकाइलोविच उसके इस व्यवहार से कितना परेशान हो गया है इसकी वह पर्वाह न करता।

उन सबने देखा कि वह तकलीफ उठा रहा है और कहा: "अगर आप थक गये हैं, तो हम रुक सकते हैं। आराम कर लीजिये।" "आराम करले? नहीं, वह बिल्कुल भी थका हुआ नहीं है।" सब लोग उदास और शान्त थे। उसे लगा कि इस उदासी का कारण वह स्वयं था और अब इस उदासी को दूर करना उसके वश में वे न था। कि भोजन करने चले गये और वह अकेला रह गया। इस बात ने उसका जीवन भार हो गया है, वह दूसरों के जीवन को भी भार बना रहा है और यह कि उसका रोग शरीर में अधिकाधिक फैलता जा रहा है, उसे दुखी बना दिया।

उपरोक्त विचारों के साथ-साथ शारीरिक वेदना लिये हुए वह बिस्तरे पर चला जाता, और रात में बहुत देर तक जगा लेटा रहता। दूसरी सुबह वह फिर उठ पड़ता, कपड़े पहनता, और घर पर वे कष्टकर चौबीस घंटे बिताता, जिनमें से हर एक उसके लिये एक मुसीबत थी। इस प्रकार वह वेदना की उस गहरी खाई में पड़ा था, जहाँ उससे सहानुभूति दिखाने वाला कोई न था!

[५]

इस प्रकार महीने बीतते चले गये। नयी साल के शुरू में उसका साला शहर में आया और उसके घर ठहरा। इवान इलिच तब कचहरी में था और प्रास्कोव्या फैडोरोवना बाजार गई थी। साला एक स्वस्थ चित्त का युवक था। इवान इलिच ने घर आने पर उसे बंडलों को खोलते हुये पाया। इलिच के अचानक कमरे में घुसने से उसका ध्यान टूट गया। उसने अपना सिर उठाया और काफी समय तक, बिना एक भी शब्द किये, इलिच के चेहरे की ओर देखता रहा। इवान इलिच सब कुछ समझ गया। आश्चर्य में मानो कुछ कहने के लिए उसके साले ने अपना मुँह खोला, फिर संभल गया।

"मैं बदल गया हूँ?"

"हाँ। कुछ परिवर्तन अवश्य हुआ है।" उसके साले ने जवाब दिया। और जैसे ही वे 'काम की बात' शुरू करने जा रहे थे कि प्रास्कोव्या फैडोरोवना आगई। उसका भाई उसके पास चला गया। इवान इलिच दरवाजा बन्द करके शीशे के सामने खड़ा हो गया और बड़ी देर तक अपने मुँह तथा शरीर को देखता रहा। फिर उसने अपनी पत्नी के साथ खिंचवाये अपने एक चित्र को उठाया और शीशे की प्रतिच्छाया से इस चित्र की तुलना की। निस्संदेह आश्चर्यजनक परिवर्तन था। इसके बाद कुहनी तक भुजाओं को नग्न कर बड़ी देर तक वह उनकी ओर देखता रहा। फिर आस्तीन चढ़ाकर एक मेज पर बैठ गया। अब उसकी मुद्रा रात्रि से भी अधिक वीभत्स दीख रही थी।

"नहीं, इस तरह काम नहीं चलेगा।" उसने विचार किया और फिर उछल कर मेज के पास चला गया; कुछ कानूनी कागज उठाये और उन्हें पढ़ने लगा। कुछ देर बाद दरवाजा खोल कर वह ड्राँइंग रूम की ओर बढ़ा किन्तु दरवाजा बन्द था और उसमें से कुछ बात-चीत सुनाई पड़ रही थी। इवान इलिच कान लगाकर सुनने लगा।

"नहीं, बीमारी इतनी आगे नहीं बढ़ी है।" प्रास्कोव्या फैडोरोवना की आवाज थी।

"नहीं बढ़ी है! देखती नहीं तुम? उसकी आँखों में देखो। उनमें प्रकाश नहीं! आखिर इन्हें हो क्या गया है?"

"कोई नहीं जानता। डा० निकोलाइविच ने कुछ बताया था पर लैस्चिरिश्की ने तो कुछ और ही कहा।"

इवान इलिच वहाँ से हट गया; और फिर अपने कमरे में जा, लेटकर विचार करने लगा। शायद गुर्दे की बीमारी हो! सब डाक्टर कहते हैं कि यह बढ़ रही है। नहीं, मैं पीटर इवानोविच से मिलूँगा।" यह इवानोविच इलिच का एक मित्र था। उसने घन्टी बजाई और सवारी लाने की आज्ञा दी।

"कहाँ जा रहे हो तुम जीन?" उसकी पत्नी ने एक असाधारण रूप से करुण और उदास चेहरा बना कर पूछा।

इवान इलिच के माथे पर परेशानी की रेखायें उभर आईं। बे मन और रुखाई से उसने जवाब दिया—"पीटर इवानोविच से मिलने जा रहा हूँ।"

पीटर इवानोविच को साथ लेकर वह एक डाक्टर के पास गया। काफी देर तक उससे बातचीत होती रही। अपने शरीर के सभी भौतिक परिवर्त्तनों को उसने अच्छी तरह समझ लिया। उसके पेट में कोई एक ऐसी प्रक्रिया हो रही थी जिसने उसके सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक संतुलन को विकृत कर दिया था।

जब वह घर लौटा तो काफी देर हो गई थी। अतः उसने भोजन किया और फिर अपने अध्ययन कक्ष में चला गया। उसकी चेतना जैसे लुप्त सी हो रही थी तथापि उसने सारे आवश्यक काम निबटाये और चाय पीने के लिये आर्ट रूम में गया।

आर्ट रूम में कुछ आगन्तुक थे। उनमें उसकी बेटी का सुयोग्य वर, एक निरीक्षक न्यायाधीश, भी था। सब बातचीत में मग्न थे, प्यानो बजा रहे थे या गा रहे थे। प्रास्कोव्या फैडोरोवना के दृष्टिकोण से इवान-इलिच की वह शाम अच्छी बीती किन्तु एक क्षण के लिये भी गुर्दे के दर्द का ख्याल उसके मस्तिष्क से नहीं गया। ग्यारह बजने पर उसने आगन्तुकों से बिदा ली और अध्ययन कक्ष में जा, कपड़े उतार कर एक उपन्यास पढ़ने लगा। उपन्यास के गूढ़ विचारों में वह उलझ गया। कल्पना ही कल्पना में उसने कामना की कि उसके गुर्दे का दर्द अच्छा होने लगा है।

"हाँ ठीक है।" उसने सोचा, "प्रकृति का सहयोग ही काफी है।" उसे अपनी औषधि का ख्याल आया। "मुझे इसे नियम से लेना चाहिये।" "मैं अब काफी आराम महसूस कर रहा हूँ।" आदि आदि।

उसने बत्ती बुझा दी और फिर एक करवट से लेट गया। किन्तु फिर कुछ देर बाद दर्द होने लगा और दिल डूबा-डूबा सा लगा। "हे भगवान! हे परमात्मा!" वह बड़बड़ाया।" "क्या यह कभी समाप्त न होगा।" "गुर्दे की बीमारी," उसने सोचा, "यह केवल गुर्दे की बीमारी ही नहीं है वरन् जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। जीवन जो रहा है—और मैं उसे रोक नहीं सकता। अपने आप को धोखा क्यों दूँ? यह कौन नहीं जानता कि मैं मर रहा हूँ। केवल कुछ सप्ताहों, कुछ दिनों का, प्रश्न है और यहाँ तक कि मैं इस समय—इसी क्षण—मर सकता हूँ। कभी प्रकाश था। किन्तु अब अन्धकार है। मैं जा रहा हूँ, पर कहाँ?"

एक सनसनी-सी उसके शरीर में दौड़ गयी और उसे लगा कि उसका दिल धड़क रहा है।

"मेरी मृत्यु के बाद क्या होगा? क्या यह मृत्यु सम्भव है? नहीं, मैं मरना नहीं चाहता!" उसने उछल कर बत्ती जलाने की कोशिश की। बत्ती और उसका स्टैन्ड दोनों उसके हाथों के काँपने से फर्श पर गिर गये और वह तकिये पर गिर कर लेट गया।

"क्या फायदा?" अन्धकार में खुली हुई आँखों से छत की ओर देखते हुए उसने ख्याल किया, "मृत्यु! कोई इसे नहीं जानता, और न ही जानने का प्रयास करता है। कोई मुझसे सहानुभूति नहीं रखता। लेकिन वे भी मरेंगे—बेवकूफ! पहले मैं, फिर वे! अभी तो उनके अच्छे दिन हैं!! मनहूस कहीं के!!!"

क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया और उसमें असाधारण दुख के भाव झलक आये। "यह असम्भव है," उसने कहा।

"नहीं, कुछ त्रुटि अवश्य है। मुझे शान्त होना चाहिये और मुझे फिर से सोचना चाहिये।"

"बीमारी की शुरुआत, फिर कुछ शान्ति, डाक्टरों का निरीक्षण, क्षीणता, बढ़ती हुई कमजोरी, ज्योति-हीन आँखें—क्या सचमुच मेरी मृत्यु हो सकती है?"

वह फिर सोचने लगा और उसकी साँस टूटने सी लगी। पलँग से नीचे झुक कर उसने माचिस तलाश की, उसका पैर बत्ती से टकरा गया, क्रोध में उसने इस बत्ती को उठा फेंका और फिर निराश तथा निश्वास होकर मृत्यु की प्रतीक्षा में वह फिर पलंग पर लेट गया।

इसी बीच में मेहमान जा चुके थे। प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने किसी चीज़ के गिरने की आवाज सुनी और कमरे में आकर बोली:

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। मेरा पैर बत्ती से टकरा गया था।"

वह बाहर से एक लैम्प ले आई। इवान इलिच इस तरह काँप रहा था मानो बहुत दूर से दौड़ कर आया हो।

"क्या बात है ? जीन ?"

"कुछ नहीं।"

उसकी पत्नी ने स्टैण्ड उठा लिया, बत्ती जलाई और शेष मेहमानों को देखने चली गई। जब वह वापस लौटी, तब भी इलिच वैसे ही लेटा था।

"क्या बात है ? क्या तबियत अधिक खराब है ?"

"हाँ।"

उसने अपना सिर हिलाया और बैठ गई।

"जानते हो जीन ! मेरा ख्याल है कि लैस्चैरिस्की से यहाँ आकर तुम्हें देखने की प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।"

इलिच कुछ नहीं बोला। क्योंकि वह जानता था कि इस प्रस्ताव का अर्थ है बिना व्यय की चिन्ता किये इस प्रसिद्ध विशेषज्ञ को बुलाना।

प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने कुछ समय बाद उसका माथा चूमा।

इलिच घृणा से भर गया। जी में आया कि धक्का दे दे। बड़ी कठिनता से वह स्वयं को रोक सका।

"विदा ! ईश्वर तुम्हें अच्छी नींद दे।"

"हाँ।"

[६]

इवान इलिच जानता था कि वह मरणासन्न है। उसकी निराशा का अन्त न था। अपने अन्तरतम में वह समझता था कि वह मर रहा है, किन्तु ऐसे विचारों का आदी होने के कारण, शीघ्र ही उसने ऐसे ख्यालों को अपने दिमाग से हटा दिया। उसने तर्क-शास्त्र में पढ़ा था कि मनुष्य मरणशील है। पर उसने मृत्यु के इस सत्य को भूलने का प्रयत्न किया— यह सोच कर कि शायद यह बात स्वयं उस पर घटित न हो क्योंकि वह दूसरे व्यक्तियों से थोड़ा विभिन्न था। बचपन में मामा और पापा, मित्या और वालोद्या, सभी उसे 'वैन्या' कह कर पुकारते थे। बचपन, किशोरावस्था, यौवन और बुढ़ापा सभी के सुख-दुख से वह परिचित था। उसका लालन-पालन 'कायश' की तुलना में बहतर रूप से हुआ था। क्या 'कायश' ने कभी उसकी जैसी चमड़े की पेटी लगाई थी? क्या उसकी माँ ने भी उसे अपने हाथों में उसी तरह लेकर चुम्बन किये थे जैसे कि इवान इलिच की माँ ने? और क्या कायश ने भी कभी यह अनुभव किया कि उसकी माँ के कपड़े इलिच की माँ के कपड़ों की तरह सिल्कन हैं? क्या कायश भी स्कूल में जरा-जरा-सी बात पर रोटी और मक्खन के लिये लड़ता था? क्या कायश भी कभी उसकी तरह किसी सभा का सभापति बना था?

"कायश निस्सन्देह मरणशील था और उसका मरना उचित भी था। पर मेरे लिये, मुझ जैसे छोटे 'वैन्या' के लिये, भावुक इवान इलिच के लिये, बात ही कुछ दूसरी है। यह असम्भव है कि मैं मरूँ। नहीं, यह बहुत ही भयानक बात होगी।" उसने कुछ ऐसा ही अनुभव किया।

"यदि मुझे भी कायश की तरह कष्ट झेलना पड़ता, तो मैं जान जाता कि मृत्यु क्या होती है। एक आंतरिक प्रेरणा मुझे सब कुछ बता देती। पर ऐसी कोई बात न थी, मैं और मेरे मित्र यह जानते हैं कि कायश मेरी तुलना नहीं कर सकता।" उसने सोचा, "नहीं, यह असम्भव है।"

"फिर भी आखिर यह सब हुआ क्यों?"

इवान इसका कारण न समझ सका, और इस व्यर्थ तथा थकाने वाले विचार के स्थान पर उसने कुछ और सोचने का प्रयत्न किया। किन्तु यही दुखदायी विचार और जीवन की यह वास्तविकता उसे परेशान करती रही।

इस वास्तविकता को दूर करने के लिये उसने बहुत-सी दूसरी बातें सोचीं। इस आशा से कि कदाचित उसे कुछ शान्ति मिले, उसने इस प्रकार के विचार-प्रवाह में मुड़ जाने का प्रयास किया जिससे कि कुछ समय के लिये ही सही, मृत्यु का विचार उससे दूर रहे। किन्तु यह कहना कितना विचित्र लगता है कि उन सब बातों ने, जो पहले उसकी चेतना को अशक्त, निर्बल और सीमित बनाये हुई थीं, अब उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला।

उसने अपना अधिकांश समय पुराने जीवन-क्रम को फिर से प्रवाहित करने में लगा दिया। वह सोचता, "मैं फिर अपने कर्त्तव्यों की पूर्त्ति में लग जाऊँगा, आखिर उन्हीं के कारण ही तो मेरा यह जीवन है।" और फिर सब प्रकार के संदेहात्मक विचारों को अपने मन से हटा कर वह कचहरी चला जाता और अपने दोस्तों के साथ बातचीत में लग जाता। फिर कचहरी में आये जन-समूह की ओर बड़ी भाव-पूर्ण भंगिमा से देख कर वह कुर्सी की भुजाओं पर अपना वजन डालते हुये, अपनी आदत के अनुसार आराम से बैठ जाता, किसी साथी की ओर झुक, उसके कागजों को अपनी ओर खिसका कर, कानाफूंसी शुरू कर देता। फिर अपनी कमर को सीधा कर कुछ शब्द कहता और कचहरी की कार्यवाही शुरू हो जाती।

पर उसे लगता कि दर्द बढ़ रहा है और कचहरी के काम में इससे बाधा पड़ रही है। दर्द के ख्याल को दूर करने की वह कितनी भी कोशिश करे, उसका प्रयास विफल होता। उसकी आँखों की ज्योति जवाब देने लगी। "क्या दुख ही सत्य है ?" उसके मुख से निकला। उसके साथी और आश्रित आफीसर आश्चर्य और परेशानी से उसकी ओर देखने लगे। उसने स्वयं को झकझोरा, होश में आने की कोशिश की और फिर बड़ी मुश्किल से कचहरी का काम समाप्त कर घर लौटा। अब पहले की-सी लगन उसमें नहीं थी, किसी भी कार्य को करने की उसे इच्छा न होती। अप्रत्याशित रूप से परेशान था वह।

अपनी परेशानी को टालने के लिये उसने नये-नये उपायों की खोज की, और उनसे उसे कुछ सन्तोष भी हुआ, पर शीघ्र ही वे व्यर्थ प्रमाणित हो गये।

कचहरी से आने पर वह अपने ड्राइंग रूम में चला जाता था, जिसे सजाने के लिए उसने अपना इतना अधिक समय बर्बाद किया था।

यह कितना हास्यास्पद था! वह जानता था कि उसकी बीमारी का कारण है गहरा सद्मा। वह अन्दर गया और क्या देखता है कि मेज की वार्निश खुर्ची पड़ी है। उसने इधर-उधर टटोला और एक ऐल्बम, जिसकी पीतल की मूठ नीचे झुक गई थी, जमीन पर पड़ा मिला। उसने उस कीमती एल्बम को उठा लिया, जोकि बड़े परिश्रम, धैर्य और लगन से तैयार किया गया था। इवान इलिच अपनी बेटी और दोस्तों पर झुँझलाया। एल्बम गिरने के कारण कई जगह से टूट गया था और उसके कई चित्र इधर-उधर बिखर गये थे। बड़े धैर्य से उसने कमरे की सभी वस्तुओं को कमरे के एक कोने में पौधों के समीप रख दिया और चौकीदार को आवाज़ दी। उसकी बेटी सहायता के लिये आ गई। उसकी पत्नी प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने समझाया :

"सब्र करो, नौकर सब ठीक कर देगा। तुम्हें चोट लग जायगी।"

और अचानक फिर उसे दर्द महसूस होने लगा। बरबस इच्छा करने पर भी वह इसे भूल न सका।

"ओह! यही वास्तविकता है। कितनी विचित्र! कितनी वीभत्स! काश! इससे छुटकारा मिल पाता।"

"पर नहीं, यही तो सत्य है!"

अब वह अपने अध्ययन कक्ष में चला गया और सो गया। दर्द फिर जोर से उठने लगा।

[७]

यह कैसे हुआ, यह कहना असम्भव है; क्योंकि यह धीरे-धीरे हुआ, बिना किसी के देखे हुए। पर इवान इलिच की बीमारी के तीसरे महीने में उसकी पत्नी, पुत्री, बेटा और उसके परिचित, डाक्टर, नौकर आदि, सबसे ऊपर वह स्वयं, यह जान गये। दूसरे लोगों की उसमें यही दिलचस्पी थी कि वह अपना स्थान शीघ्र ही खाली कर देगा और सबको उसकी उपस्थिति से जो परेशानी हुई है, उन्हें उससे मुक्त कर देगा—और स्वयं भी उन तकलीफों से मुक्त हो जायेगा।

वह पहले से कम सोने लगा। उसे अफीम और मर्फिया के नींद लाने वाले इन्जैक्शन दिये जाने लगे। पर इससे उसे मुक्ति नहीं मिली। तन्द्रा की दशा में जो निराशा का अनुभव उसने किया उससे उसे कुछ आराम ही मिला, पर बाद में वह उतना ही दु:खपूर्ण लगने लगा जितना कि स्वयं दर्द।

डाक्टर की आज्ञा से उसके लिये खास प्रकार के भोजन बनाये जाने लगे। किन्तु वे सब पदार्थ उसे बुरे और अरुचिकर ही लगे।

शरीर की क्षीणता के लिये भी खासतौर का प्रबन्ध किया गया। हर समय उसे यह सब एक बन्धन सा लगता। बन्धन इस सबकी गन्दगी और असाधारणता के कारण किसी इस कारण कि इसमें और दूसरे व्यक्ति को भी भाग लेना पड़ता था।

किन्तु इन अरुचिकर बातों से इवान इलिच को आराम मिला।

रसोइये का सहकारी जैरासिम हमेशा थूकदान ले जाता। जैरासिम एक स्वच्छ, ताज़ा, किसान का लड़का था, जो अच्छे वेतन के कारण मजबूत हो गया था और हमेशा खुशमिज़ाज और प्रसन्न रहता था। शुरू में तो साफ रूसी कपड़ों में उसे यह गन्दा काम करते देख इवान इलिच कुछ परेशान ही हो गया था।

एक बार जब वह थूकदान से उठा तो अपना पायजामा पहनने में भी असमर्थ होने से अपनी आराम कुर्सी में बैठ गया और अपनी ढीली पड़ी हुई जाँघों की ओर देखता रहा, जिनमें बिल्कुल गोश्त नहीं था।

जैरासिम एक ऐसा भारी जूता पहने था जिसमें से अभी भी ताजी मांस की खुशबू आ रही थी। उसकी कमीज की बाँहें ऊपर कुहनियों पर मुड़ी हुई थीं, और यद्यपि उसके चेहरे पर प्रसन्नता की आभा फूटी पड़ रही थी, वह उस आभा को रोकने का भरसक प्रयत्न कर रहा था। वह थूकदान तक आया।

"जैरासिम!" इवान इलिच ने एक क्षीण आवाज से कहा। जैरासिम चौंक गया, स्पष्टतया डरा हुआ मानो उसने कोई भूल कर दी हो। तेजी के साथ उसने अपनी जबान और चेहरा घुमाया जिस पर अभी-अभी दाढ़ी आना शुरू ही हुआ था।

"जी हुजूर।"

"तुम्हें यह काम बहुत ही बुरा लगा होगा। तुम्हें मुझे माफ कर देना चाहिये। मैं मजबूर हूँ।"

"ओह! क्यों साहब?" जैरासिम की आँखें चमकीं और उसके सफेद चमकदार दाँत दिखाई दिये। "कोई खास परेशानी नहीं। यह तो बीमारी का मामला है।"

उसके चतुर, अभ्यस्त हाथों ने अपना काम किया और धीरे-धीरे वह कमरे के बाहर चला गया। पाँच मिनट बाद वह उसी तरह लौट आया।

इवान इलिच आराम कुर्सी पर उसी स्थिति में अभी तक बैठा हुआ था।

"जैरासिम" जब उसने धोया हुआ बर्तन बदल दिया तो इवान इलिच ने कहा, "मेहरबानी करके मेरी मदद करो।" जैरासिम उसके पास आया। "मुझे उठाओ। मेरे लिये उठना भी मुश्किल है। और मैंने मित्री को बाहर भेज दिया है।"

जैरासिम ने अपने मालिक के हाथ पकड़े, अपने एक हाथ का सहारा देकर दूसरे हाथ से उसका पायजामा खोला और उसे इसी प्रकार बिठाल देता, किन्तु इवान इलिच ने सोफे पर जाने की इच्छा प्रकट की। जैरासिम, बिना किसी प्रयास के, उसे सहारा देकर सोफे तक ले गया, और उसे वहाँ बैठा दिया।

"धन्यवाद! तुम कितनी अच्छी तरह और सरलता से यह सब कर लेते हो!"

जैरासिम मुस्कराया और कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ा। किन्तु इवान इलिच ने उसकी उपस्थिति में इतना आराम महसूस किया कि उसकी इच्छा उसे जाने देने की नहीं थी।

"एक बात और, जरा वह कुर्सी मेरे पैरों के पास लाना। नहीं, वह नहीं दूसरी। जब मेरे पैर उठे होते हैं तब मुझे अच्छा लगता है।"

जैरासिम कुर्सी ले आया, उसे ठीक स्थान पर रख दिया और इवान इलिच के पाँव उठा कर इस कुर्सी पर रख दिये। इवान इलिच को यह अच्छा लगा। जैरासिम उसके पाँव पकड़े बैठा रहा।

"जब मेरे पैर उठे हुए होते हैं तब कितना अच्छा लगता है!" उसने कहा। "जरा उनके नीचे वह कुशन रख दो।"

जैरासिम ने ऐसा ही किया। उसने फिर पैर उठाये और उन्हें पीछे रख दिया। कुशन पर रखने के लिए जैरासिम को उसके पैर कुछ देर को जमीन पर रखने पड़े। इलिच को यह अच्छा न लगा।

"जैरासिम" उसने कहा, "क्या तुम काम में व्यस्त हो?"

"बिल्कुल नहीं साहब।" जैरासिम ने कहा। उसने शहर के लोगों से यह सीख लिया था कि भले आदमियों के साथ कैसे बोलना चाहिए।

"अब तुम्हें क्या करना है ?"

"मुझे क्या करना है ? कल के लिये लकड़ियाँ काटने के अलावा मैंने सब कुछ कर लिया है।"

"तब यदि तुम बुरा न मानो तो मेरे पैर जरा ऊपर उठाओ।

"निस्संदेह यह मैं कर सकता हूँ। क्यों नहीं ?" और जैरासिम ने अपने मालिक के पैर ऊपर उठाये।

"बाकी रसोई के सब काम कर लिए ?"

"उनके बारे में आपका परेशान होना व्यर्थ है। अभी काफी समय है।"

इवान इलिच ने जैरासिम से प्रार्थना की कि वह बैठ कर उसके पाँवों को सहारा दे। जैरासिम ने ऐसा ही किया।

फिर इवान इलिच उससे बातें करने लगा।

इसके बाद तो उसका और जैरासिम का इस तरह मिलना जारी रहने लगा। उससे बातें करना इलिच को बहुत ही पसन्द था। जैरासिम जो कुछ कहता इतनी सरलता से और एक ऐसे मिलनसार ढंग से कहता कि उसकी बातें उसके दिल को छू जातीं। प्रायः सभी दूसरे लोगों के स्वास्थ्य, वैभव और सुख की बातों से उसे ईर्ष्या होती, परन्तु जैरासिम को सुखी और स्वस्थ देख कर उसे सन्तोष मिलता।

इवान इलिच को सबसे ज्यादा बुरा तो दूसरे लोगों का यह ख्याल लगता कि वह मर नहीं रहा है, वरन् केवल बीमार है। और यह कि यदि ठीक से इलाज किया जाये तो उसकी बीमारी अच्छी हो सकती है। वह खुद इस निर्णय में विश्वास नहीं करता था। ऐसा सोचना भी, उसके विचार में, अपने आप को धोखा देना था। वह जानता था कि उसके सगे,

सम्बन्धी और मित्र जो कुछ भी कहेंगे उसका फल केवल यही होगा—और अधिक तकलीफ, दुख और मृत्यु।

यही गलतफहमी उसे खाये जा रही थी। जिस कदम-कदम पर बढ़ती हुई मृत्यु का वह स्वयं अनुभव कर रहा है, और जिसे वे सब भी अनुभव कर रहे हैं, उसको भी झुठलाने का प्रयत्न करना। यही नहीं, बल्कि यह इच्छा करना कि इवान इलिच भी उनकी हाँ में हाँ मिलाए।

उसकी बीमारी उसके दोस्तों के लिए दावतों और अन्य मौकों पर चर्चा का उपयुक्त विषय थी। पर इवान इलिच के लिए यह सबसे बड़ा अभिषाप था। एक बार तो जब उसके मित्र उसके सामने ही इस बीमारी के बारे में बे सिर-पैर की दिलासा देने की सी बातें करने लगे तो उसकी यह कहने की इच्छा हुई—"बन्द करो यह बकवास। मैं भी जानता हूँ और तुम भी कि मैं मर रहा हूँ। फिर इस प्रकार की बातों से लाभ?" पर उसे ऐसा कहने का साहस नहीं हुआ।

उसके समीप के तथाकथित हितचिन्तकों ने उसकी बीमारी को एक साधारण अरुचिकर घटना—एक आवश्यक बुराई—समझ लिया था। किसी को भी उसके साथ हमदर्दी न थी। केवल जैरासिम ही उसकी बीमारी को गम्भीर रूप में लेता था और उसके साथ सच्ची सहानुभूति रखता था। कभी-कभी तो रात-रात भर वह जैरासिम को रोक लेता और अपने बिस्तरे से हटने न देता। जैरासिम भी उसकी बात मान लेता। वह कहता—"यदि आप बीमार न होते तो बात दूसरी थी। लेकिन जब आप खाट पर पड़ ही गये हैं तो थोड़ी सी परेशानी मैं झेल सकता हूँ। आपको इसकी चिंता न करनी चाहिए।"

जैरासिम यह बात ईमानदारी से कहता था। इवान इलिच की बीमारी से वह सचमुच में दुखी था। उसे अपने मालिक के दुर्भाग्य पर अफसोस था। एक बार जब इवान इलिच ने उससे कहा कि वह व्यर्थ ही इतनी सेवा-सुश्रुषा करता है तो जैरासिम ने कहा—"हम सभी को

मरना है। फिर इस थोड़ी सी परेशानी उठाने के लिए आप मेरे कृतज्ञ क्यों होते हैं? मैं तो इसे बिल्कुल भी परेशानी नहीं मानता। बल्कि मुझे संतोष है कि प्रभु ने मुझे एक ऐसे आदमी के लिए कुछ करने का अवसर दिया है जो मर रहा है। सम्भव है जब मेरी मृत्यु समीप आए तो कोई मेरी भी इसी प्रकार सेवा करे।"

इस प्रकार सहानुभूति के दो शब्द सुन लेना उसे अच्छा लगता था। वह चाहता था कि अन्य लोग भी उसके दुख को दुख समझें और उससे इसी तरह बर्त्ताव करें जैसा कि छोटे बच्चों के साथ किया जाता है।

वह जानता था कि अब उसकी उम्र ढल चुकी है। बाल सफेद हो चुके हैं और चेहरे पर झुर्रियां हैं तो भी वह ऐसे व्यवहार की आशा करता था। जैरासिम के व्यवहार में एक ऐसा अपनापन था जो उसे अच्छा लगता था। इसीलिए जैरासिम उसका सबसे ज्यादा अंतरंग मित्र बन गया था।

इवान इलिच की इच्छा होती कि वह रोये, सिसकियाँ भरे, एक मासूम शिशु की तरह। लेकिन शैबक के आते ही वह बहुत गम्भीर बन जाता और, शायद आदत से मजबूर होकर, अपीलों के सम्बन्ध में अपनी राय जाहिर करता।

इसी प्रकार उसके दिन कट रहे थे। उसका सम्पूर्ण जीवन दुःखमय बन गया था।

---

[८]

सुबह का समय था। वह जान गया कि यह सुबह का समय था क्योंकि जैरासिम जा चुका था और चौकीदार ने आकर बत्तियाँ बुझा दी थीं, परदे खींच दिये थे और धीरे-धीरे झाड़ू लगना शुरू कर दिया था। वैसे यह सुबह थी या शाम, शुक्रवार था या शनिवार, इससे उसे कोई मतलब न था। उसके लिये सब कुछ एक था। दुख, एक क्षण को भी न बुझने वाली लड़खड़ाती हुई जीवन की चेतना और केवल उस घृणात्मक मृत्यु का सामीप्य ही सत्य था जिसकी कि वह प्रतीक्षा में था। इस दृश्य में सप्ताह या घण्टे क्या अर्थ रखते थे?"

"क्या आप कुछ चाय लेंगे?" पीटर ने पूँछा।

वह नियमितता पसन्द करता था और चाहता था कि भद्र पुरुष प्रातः चाय पिया करें। परन्तु प्रत्यक्ष उसने कुछ भी न कहा।

"क्या आप सोफे तक चलना पसन्द करेंगे?"

"वह कमरे को साफ करना चाहता है। पर मैं बीच में पड़ा हूँ। मैं ही गन्दगी और अव्यवस्था हूँ।" उसने सोचा। पर इतना ही कहा :

"नहीं, मुझे अकेला ही छोड़ दो।"

इवान इलिच ने अपने हाथ फैलाए। चौकीदार सहायता के लिये आया।

"क्या है साहब?"

"मेरी घड़ी?"

चौकीदार ने घड़ी उठा कर अपने मालिक को दे दी।

"ओह ! साढ़े आठ बज गये ! क्या सब लोग उठ चुके हैं ?"

"जी नहीं । सिवाय ब्लाडीमीर इवानिच के, जो स्कूल जा चुका है, सभी सोये पड़े हैं । मालकिन ने रात कहा था कि यदि आपको कोई काम हो तो मैं उन्हें सुबह जल्दी जगा दूँ ।"

"नहीं, कोई जरूरत नहीं । मेरे लिए एक कप चाय बना दो ।"

चौकीदार दरवाजे तक गया । पर वह इवान इलिच को कमरे में अकेला नहीं छोड़ना चाहता था । इसलिए वह लौट आया ।

"हाँ, मेरी दवा । पीटर मेरी दवा दो ।"

शायद दवा से कोई तसल्ली मिले—इलिच ने सोचा ।

उसने एक चम्मच दवा ली और तेजी से घूँट भर कर पी गया ।

'नहीं, इससे काम नहीं चलेगा । यह सब बेवकूफी है—धोखा है ।' इवान इलिच बड़बड़ाता रहा । जैसे ही दवा उसके गले में पहुँची, वह इसके कड़वे स्वाद से तिलमिला उठा ।

काश ! उसका यह कष्टकर दर्द एक क्षण के लिए भी बन्द हो जाता ।

पीटर बाहर चला गया । अकेले रह जाने पर उसका दर्द और भी बढ़ा हुआ मालूम पड़ने लगा । उसने ईश्वर से बार-बार प्रार्थना की कि मृत्यु शीघ्र ही आ जाए ताकि वह इस अनवरत दर्द से छुटकारा पा सके ।

जब पीटर ट्रे पर चाय लेकर लौटा तो इवान इलिच उसकी ओर बड़ी देर तक अजनबी की तरह घूरता रहा । लेकिन फिर जैसे कुछ सोच कर उसने अपनी निगाहें फेर लीं ।

'चाय नीचे रख दो और मुझे कपड़े पहनने में थोड़ी सहायता करो ।"

फिर इवान इलिच ने हाथ मुँह धोया, दाँत साफ किये, बालों में कंघी की और शीशे में अपना चेहरा देखा । अपने बालों और पिचके हुये गालों को देखकर वह एक अज्ञात भय से काँप उठा ।

पीटर उसकी कमीज बदलने लगा। इवान इलिच जानता था कि अपने शरीर को नग्न देख कर तो उसे अपने स्वास्थ्य की नाजुक हालत पर और भी अधिक अफसोस होगा। इसीलिये इस ओर से उसने अपना ध्यान हटाने की बरबस चेष्टा की।

इस प्रकार प्रातःचर्य्या से निवृत्त हो चुकने पर उसने अपना लबादा उठाया, इसे अपने चारों ओर लपेटा और चाय पीने के लिए आराम कुर्सी पर बैठ गया। कुछ समय के लिए उसने ताज़गी-सी महसूस की लेकिन फिर चाय का घूँट भरते ही उसे कड़वे स्वाद का अनुभव हुआ और दर्द लौट आया।

बड़ी मुश्किल से उसने चाय खत्म की। फिर पाँव फैला कर लेट गया। पीटर भी बाहर चला गया।

इस प्रकार जीवन की गाड़ी ढुलमुल चल रही थी। एक आशा की किरण चमकती और फिर निराशा का अथाह सागर हिलोरें मारने लगता। एक स्थायी कभी न रुकने वाला दर्द! एकान्त में वह इस दर्द से, अपने इस क्रूर, निर्मम दुर्भाग्य से, जूझता। पर दूसरों की उपस्थिति में उसकी दशा और भी ज्यादा करुण हो जाती।

'मैं डाक्टर से कहूँगा कि वह गहरी नींद लाने के लिए मुझे मर्फिया की एक और खुराक दे दे। इस प्रकार जाग-जाग कर तो रातें अब काटी नहीं जातीं।' वह सोचता।

एक घण्टा इसी प्रकार बीता और फिर दूसरा। दरवाजे पर घण्टी बजी। अकस्मात डाक्टर आ गया और कहने लगा—अब तुम्हें बिल्कुल भी चिंतित नहीं होना चाहिए इवान। हम तुम्हारे इलाज में कोई असर नहीं छोड़ेंगे। उसे यह सोचकर अफसोस हुआ कि डाक्टर सब कुछ जानते हुए भी उसे बेवकूफ बना रहा है।

फिर डाक्टर तेजी से अपने हाथ मलता हुआ कहने लगा—"ओह! कितनी सर्दी है। कैसा तेज पाला पड़ रहा है। मैं थोड़ा आग

के पास बैठ लूँ ।" मानो जब तक गर्माहट न आये वह कुछ कर ही नहीं सकता ।

फिर इवान इलिच को लगा जैसे डाक्टर कहना चाहता हो—"अच्छा, अब क्या हाल है ?" लेकिन यह सोचकर कि इससे काम नहीं चलेगा वह कहने लगा—"रात कैसी गुजरी ?" इवान इलिच ने उत्तर में कहा—"तुम्हें झूठ बोलते हुए शर्म नहीं आती ?" और फिर कराह उठा—"ओह ! कैसी मुसीबत है ।"

"हाँ, आप मरीज लोग सब एक से ही होते हैं। मैं खूब समझता हूँ । अच्छा नमस्ते ।"

डाक्टर का चेहरा गम्भीर हो गया । उसके नथने फूल गये । लगा वह नाराज है । वह इवान इलिच की नब्ज गिनता है, तापक्रम देखता है और फिर अपना स्टैथस्कोप लगा कर उसके दिल की धड़कनें सुनने लगता है।

इवान इलिच जानता है कि सब दिखावटीपन व्यर्थ है, बेवकूफी है । लेकिन जब डाक्टर एक घुटने पर झुक कर उसकी नब्ज टटोलता है, और चेहरे पर बड़े अजीब से भाव लिए उस पर अनेक प्रकार की कलाबाजियाँ-सी खाने लगता है तो इवान को बरबस उसके सामने आत्मसमर्पण कर देना पड़ता है ।

सोफे पर झुक कर डाक्टर उसका निरीक्षण कर ही रहा था कि प्रास्कोव्या फैडोरोवना अपनी रेशमी ड्रेस पहने हुए दर्वाजे तक आई, और पीटर को इस बात पर दोष देने लगी कि उसने प्रास्कोव्या फैडोरोवना को डाक्टर के आने की सूचना नहीं दी ।

उसने अन्दर आकर अपने पति का चुम्बन लिया, और यह प्रमाणित करने लगी कि वह बहुत पहले ही तैयार हो चुकी थी पर एक गलतफहमी के कारण डाक्टर के आने पर वह उसके पास न आ सकी ।

इवान इलिच ने उसकी ओर देखा, सर से पैर तक उसे घूरा और

उसके हाथ और गर्दन श्वेत, गुदगुदे स्वच्छ हाथ और नाजुक गर्दनके सामने ऐंठ गया। अपनी सम्पूर्ण आत्मा से वह उससे नफरत करता था। इस नफरत की सिरहन के कारण उसके छूने से ही उसे तकलीफ-सी हुई।

उसके और उसकी बीमारी के प्रति अब भी उसकी पत्नी के दृष्टि-कोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। उसका अपने पति की बीमारी के प्रति वही दृष्टिकोण था जो कि डाक्टर ने इस बीमार के प्रति अपना लिया था—यानी यह कि वह जो कुछ उसे करना चाहिये वह नहीं कर रहा था, और इसीलिए खुद दोषी था, और यह कि वह स्वयं उससे बड़े प्यार से बर्त्ताव करती थी—और अब अपना दृष्टिकोण नहीं बदल सकती थी।

"आप देखते हैं, ये मेरी बात नहीं सुनते और न समय पर दवा ही लेते हैं। सबसे उपर बात तो यह है कि ये ऐसी स्थिति में सोते हैं—जो इनके लिए बुरा है।"

डाक्टर एक बनावटी व्यावहारिकता के साथ मुस्कराया और कहने लगा: "क्या किया जा सकता है। बीमार लोग इस प्रकार की बेवकूफी की बातें किया ही करते हैं। पर हमें उन्हें क्षमा कर देना चाहिए।"

जब निरीक्षण पूरा हो चुका तो डाक्टर ने अपनी घड़ी की ओर देखा और प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने इवान इलिच से कहा कि वह चाहे जो कुछ कहे, पर उसने आज एक मशहूर विशेषज्ञ को बुला भेजा है जो उसका निरीक्षण करेगा। वह अपने घर के वैद्य मिकाइल मैनिलोविन से भी इस सम्बन्ध में बातचीत करेगी।

"कृपया विरोध न कीजिए। क्या मैं यह सब अपने फायदे के लिए कर रही हूँ?" उसने व्यंग के साथ कहा। यह दिखाते हुये मानो यह सब वह उसके लिए कर रही हो और उससे सिर्फ इसलिए कह रही हो कि मना करने की कोई गुन्जाइश न रह जाये। अपनी भौंओं को साफ करते हुए वह चुपचाप सुनता रहा। उसने यह महसूस किया कि

वह एक उलझन में पड़ गया है और इस उलझन से निकलना मुश्किल है।

जो कुछ भी उसने इलिच के लिए किया वस्तुतः स्वयं अपने लाभ के लिये था। पर वह यह बात बार-बार इसलिए कहती थी कि कोई उसकी ईमानदारी में अविश्वास न करे।

साढ़े ग्यारह बजे मशहूर विशेषज्ञ आ पहुँचा। धड़कन फिर शुरू हो गई, और दुबारा मृत्यु और जीवन एवं गुर्दे और पेट की बीमारी के सम्बन्ध में दूसरे कमरे में उसकी उपस्थिति में ही बातचीत शुरू हो गई।

इवान इलिच ने भय और आशा के बीच चमकती हुई आंखों से जो प्रश्न उसके सामने रखा, यह था कि उसके अच्छे होने की गुन्जाइश थी या नहीं। डाक्टर ने कहा कि यद्यपि वह विश्वास तो नहीं दिला सकता पर तो भी अच्छा हो जाने की सम्भावना है। इवान इलिच ने जिस नजर से डाक्टर को बाहर जाते देखा वह इतनी निराशातुर थी कि डाक्टर को फीस देने के लिये जब प्रास्कोव्या फैडोरोवना कमरे से बाहर निकली तो वस्तुतः वह रो पड़ी।

डाक्टर के प्रोत्साहन से आशा की जो किरण चमकी थी वह अधिक समय तक न रही। वही कमरा, वही चित्र, परदे, दीवार के कागज, दवा की बोतलें, और दर्द से भरा शरीर—इवान इलिच ने कराहना शुरू किया। उसकी खाल में एक इन्जैक्शन घुसेड़ा गया और फिर वह तन्द्रा में डूब गया।

जब वह जागा तो दिन छिप चुका था। वे उसके लिये भोजन लाए। और बड़ी मुश्किल से कुछ चाय के साथ उसने भोजन किया। हमेशा की तरह रात सर पर थी।

ब्यालू के बाद सात बजे प्रास्कोव्या फैडोरोवना ब्लाउज़में अपनी छातीआं उठाए हुए, शाम के कपड़े पहने, कमरे में आई। उसके मुँह पर पाउडर

लग रहा था। उसने सुबह उसे याद दिलाई थी कि वे लोग थ्येटर जा रहे हैं। 'साराह बर्नहार्ड' शहर देखने आई थी और उन्होंने एक बॉक्स ले रखा था। उसे कुछ आघात भी पहुँचा, पर उसे याद आया कि उसने स्वयं एक बॉक्स किराये पर लेने पर जोर दिया था, क्योंकि यह बच्चों के लिए काफी शिक्षाप्रद और आनन्ददायक है। उसने अपनी घबड़ाहट छिपाने की कोशिश की।

आत्मसंतुष्ट किन्तु कुछ अपराधिन-सी महसूस करती हुई प्रास्कोव्या फैडोरोवना अन्दर आ गई। वह बैठ गई और फिर जैसा कि इलिच ने देखा, उसने पूछने के लिये, न कि जानने के लिए, क्योंकि जानने को कुछ था ही नहीं, उसकी तबियत के बारे में पूँछा। तब उसने जो कुछ वह कहना चाहती थी कहा उसकी जाने की इच्छा न थी, लेकिन बॉक्स ले लिया गया था, और हैलेन, उसकी बेटी, और उसकी बेटी का मंगेतर, निरीक्षक जज पैट्रोविच, सभी जा रहे थे और उन्हें अकेले जाने देने का तो प्रश्न ही नहीं था। उसने कहा कि वह उसके पास कुछ देर बैठना पसन्द करेगी और यह कि जब वह चली जाये तब उसे डाक्टर के आदेशों का पालन करना चाहिये।

"ओह! क्या फैडोर पैट्रोविच यहाँ आना पसन्द करेंगे?" "बहुत ठीक।"

अपने शाम के कपड़े पहने हुए उसकी बेटी आई। उसका नया, सुर्ख मांस चमक रहा था वही चमड़ा, जो उसके लिये तकलीफ का कारण था। मजबूत, स्वस्थ, प्रेम में अनुरक्त और बीमारी या मृत्यु से निर्भय, कड़ा धीरज रखने वाली। ये सब बातें इलिच की खुशी में बाधक हैं।

फैडोर पैट्रोविच अपने कपड़े पहन कर आया। उसके बाल घुँघराले थे, उसकी लम्बी गर्दन के चारों ओर एक कालर कसा था, एक बड़ी सफेद कमीज और लम्बे काले सकरे पायजामे उसकी जाँघों

पर थे, उसने एक सफेद लबादा भी ओढ़ रखा था और उसके हाथ में हैट था।

उसके पीछे-पीछे स्कूल जाने वाला लड़का भी चुपचाप चला आया; एक नई पोशाक में, दस्ताने पहने हुए। उसकी आँखों के नीचे गहरी काली छाया थी जिसका मतलब इवान इलिच खूब समझता था।

अपने बेटे को देखकर उसे कुछ करुणा सी आती थी और अब लड़के के भयातुर चेहरे को देखना भी भयानक लगता था। इवान इलिच को लगा कि जैरासिम के अलावा वान्या ही ऐसा था, जोकि उसे समझता था और उससे सहानुभूति रखता था।

वे सब बैठ गये और फिर पूँछने लगे कि उसकी तबियत कैसी थी। कमरे में पूर्ण शान्ति छा गई। लीसा ने चश्मे के बारे में पूँछा। वह कहाँ रख दिया गया था और इसे कौन ले गया था। इसके बारे में माँ और बेटी के बीच एक झड़प भी हो गई। इससे वातावरण कुछ विषमय हो गया था।

फैडोर पैट्रोविच ने इवान इलिच से पूँछा कि क्या उसने कभी 'साराह बर्नहार्ड' को देखा है। इवान इलिच पहले तो कुछ नहीं समझा फिर उत्तर दिया: "नहीं, क्या तुमने उसे पहले देखा है?"

"हाँ!"

प्रास्कोव्या फैडोरोवना ने कुछ ऐसे रोलों का वर्णन किया जिनमें उसका अभिनय वास्तव में अच्छा था। उसकी बेटी इससे सहमत थी। बातचीत, उसके अभिनय की वास्तविकता के सम्बन्ध में होने लगी—बातचीत जो हमेशा दुहराई जाती है और जो हमेशा एक-सी ही होती है।

बातचीत के दौरान में फैडोर पैट्रोविच ने इवान इलिच की ओर देखा और चुप हो गया। लीसी ने भी उसकी ओर देखा और वह चुप हो गई। इवान इलिच क्रोधित नजरों से उनकी ओर घूर रहा था। शांति तोड़नी पड़ती, पर थोड़ी देर के लिये किसी ने भी इसे तोड़ने की हिम्मत नहीं

को। और वे सब डर गये कि कहीं यह धोखा साफ न हो जाये और सत्य सबके सामने आ जाये। लीसा ने सबसे पहले साहस किया और वह चुप्पी तोड़ी।

"अच्छा, हम चल रहे हैं, खेल शुरू होने का समय है," अपने पिता के पास रखी हुई एक घड़ी की ओर देखते हुए उसने कहा। फिर वह फैडोर पैट्रोविच की ओर देख कर मुस्कराई।

ये सब उठे और नमस्ते करके चले गये।

जब वे चले गये, इवान इलिच को लगा कि यह भी अच्छा मज़ाक रहा। सारा बनावटीपन उनके साथ ही जा चुका था। किन्तु दर्द न गया—यही दर्द और डर, जो कि हमेशा रहा था; न मुश्किल और न आसान।

मिनट पर मिनट बीतता गया और घण्टे पर घण्टा। सब चीजें वैसी ही थीं और किसी का अन्त न था। और इस सबका कष्टकर प्रभाव और भी अधिक भयानक होता गया।

"हाँ, जैरासिम को यहाँ भेज दो।" उसने पीटर द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में कहा।

---

[६]

उसकी पत्नी रात को देर से लौटी; उसने आने की कोई सूचना न दी। पर इवान इलिच ने यह जान लिया। उसने अपनी आँखें खोलीं और उन्हें फिर बन्द कर लिया। प्रास्कोव्या फैडोरोवना जैरासिम को बाहर भेजकर स्वयं इलिच के पास बैठना चाहती थी पर इलिच ने अपनी आँखें खोलीं और कहा—"जरूरत नहीं, चली जाओ।"

"क्या बहुत अधिक तकलीफ है?"

"हाँ, पर यह तो अब हमेशा की बात है।"

"कुछ अफीम लीजिये?"

इलिच ने कुछ अफीम ली और वह बाहर चली गई।

रात के तीन बजे तक वह काफी परेशान रहा। उसे अहसास हुआ कि सिर का दर्द उसे किसी अन्धकार की खाई में ढकेल रहा है, पर उस खाई के तल पर वह अभी नहीं आ पाया है। वह सहम गया, चाहा कि इस गड्ढे में गिरता ही चला जाये। उसने संघर्ष किया था पर व्यर्थ। जैरासिम बिस्तरे के पाउँचों पर ऊँघ रहा था, और इलिच पैर, मोजों समेत, जैरासिम के कंधों पर रखे थे। मोम की बत्ती अब भी हवा में काँप रही थी।

"जैरासिम, तुम भी जाओ।"

"कोई बात नहीं साहब, मुझे यहाँ कुछ देर ठहरने में कोई आपत्ति नहीं है।"

"नहीं, जरूरत नहीं।"

इलिच ने जैरासिम के कंधे पर से अपने पैर हटा लिये और बाहों के सहारे एक ओर को सरक गया; उसे अपनी स्थिति पर रंज हुआ। जब तक जैरासिम कमरे में रहा, उसने मुश्किल से अपने आप को रोका पर उसके जाते ही वह बच्चों की तरह रो पड़ा और बड़ी देर तक सिसकियाँ

भरता रहा—अपनी असहाय अवस्था पर, एकाकीपन पर, मनुष्य की निर्दयता पर और परमेश्वर की उदासीनता पर।

"आखिर, तुमने मुझे इस संसार में जन्म ही क्यों दिया, क्यों मुझे इतना दुखी किया?"

इलिच को उत्तर की आशा न थी, और इस प्रश्न का कोई उत्तर हो भी नहीं सकता था। दर्द और भी तेज हुआ। पर उसने न तो किसी को बुलाया ही, और न ही वह जरा भी हिला ही। वह फिर अपने विचारों में खो गया।

"ओह! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? किस लिए है यह सब? हे परमात्मा!"

फिर वह शांत हो गया। ऐसा लगा मानो वह अपनी आत्मा की आवाज को सुन रहा था। अनेकों विचार उसके मन में उठ रहे थे।

"तुम क्या चाहते हो?" मानो उसकी आत्मा ने प्रश्न किया।

"क्या चाहता हूँ मैं? अभी और जीवित रहना; न कि इस प्रकार कष्ट झेलना।" उसका उत्तर था। असह्य कष्ट भी उसके विचारों की शृंखला तोड़ने में समर्थ न था।

"जीवित रहना? पर कैसे?" उसकी अन्तरात्मा में स्वर गूँज उठे।

"कैसे? जैसे कि मैं पहले रहता था—सुख से।"

"जैसे कि तुम पहले रहते थे! सुख पूर्वक!" आवाज में प्रतिध्वनि हुई।

अपनी कल्पना में उसने जीवन के सबसे अधिक आनन्ददायक दिनों का स्मरण किया। किन्तु यह कहना विचित्र होगा कि शैशवावस्था के कुछ संस्मरणों के अतिरिक्त और कोई बात वह न सोच सका। काश! यह शैशवावस्था फिर वापस लौट आती। पर वह शिशु, जिसने उस अवस्था का आनन्द लिया था, अब नहीं था। उसके व्यावहारिक जीवन के प्रारम्भ होने के समय के पूर्व ही वह सब, जो कि आनन्द-दायक था, बीत गया और महत्त्वहीन दिखाई पड़ने लगा।

अपनी कल्पना में जितना ही वह अपनी बाल्यावस्था से हटता गया और वर्तमान के समीप आता गया उसे वे आनन्द सारहीन और संदेह-जनक से लगने लगे। 'कानून विद्यालय' में नये सम्बन्धों और आशा एवं मित्रता की नई भावनाओं का उदय हुआ था, किन्तु उच्च वर्गों में इस सब का अधिक महत्त्व न था।

सरकारी जीवन के प्रथम वर्ष में जब वह गवर्नर के यहाँ कर्मचारी था तो ये सुहावने क्षण फिर आये थे—उसका एक स्त्री से प्यार हुआ था। लेकिन फिर कुछ उलझन सी आ गई थी और जो कुछ भी उचित था अतीत में खो सा गया था। फिर उसका विवाह हुआ था। किन्तु शीघ्र ही वह अपनी पत्नी की ओर से उदासीन हो गया था—उसकी धर्मपत्नी की कड़वी साँसें, भावुकता, थका देने वाले सरकारी काम, धन के लिये दौड़-धूप; एक साल, दो साल, दस साल, बीस साल, सब एक-सा सारहीन जीवन-क्रम। जब तक यह जीवन-क्रम रहा, उतना ही यह अरुचिकर होता गया। उसे लगा कि मानो वह किसी पहाड़ी पर से नीचे गिर रहा हो, यद्यपि उसकी उन्नति हो रही थी और दूसरों की दृष्टि में उसका सम्मान बढ़ रहा था। पर वह तो यही समझता था कि अब सब कुछ समाप्तप्राय: है—केवल 'मृत्यु' शेष है।

"तब इसका क्या अर्थ है? क्यों? यह असम्भव है कि जीवन इतना अर्थशून्य और वीभत्स हो जावे; पर यदि सचमुच में यह इतना वीभत्स और अर्थशून्य ही है तो फिर मेरे मरने का अर्थ क्या है? जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण में कुछ भूल अवश्य है।"

"सम्भव है मैं जैसा चाहिये वैसा न रहा हूँ।" उसे अहसास हुआ। "पर यह हो ही कैसे सकता है। मैंने तो प्रत्येक कार्य उचित ढंग से ही किया।" उसे उत्तर मिला।

शीघ्र ही ये विचार उसके मस्तिष्क से हट गये। जीवन और मृत्यु की समग्र उलझनों के बारे में माथापच्ची करना मानो कोई व्यर्थ की बात हो।

"तब तुम क्या चाहते हो ? जीवित रहना ? कैसे ? जैसे कि कचहरी में रहते थे जब कि चौकीदार आवाज लगाता था,—'आदरणीय न्यायाधीश' ? इस प्रकार किसी अज्ञात शक्ति ने उससे प्रश्न किया और वह दीवार की ओर मुँह करके विचारों में खो गया।

निष्कर्ष यही निकला कि उसका जीवन उतना पवित्र नहीं रहा, जैसी कि अपेक्षा थी। उसने जीवन के औचित्य पर विचार शुरू किया और इस विचार को अपने मस्तिष्क से दूर कर दिया।

[१०]

एक पखवारा और बीत गया। अब इलिच चारपाई छोड़ने के कतई योग्य न था। वह दीवार पर टकटकी लगाये सदैव जीवन के शाश्वत कष्टों पर विचार करता रहता और एकान्त में इन्हीं निष्कर्षहीन समस्यायों में खोया रहता। "इस तरह लगातार बीमार रहने का क्या अर्थ है ? यह तो मृत्यु से भी अधिक कष्टकर है।" उसकी अन्तरात्मा में स्वर गूँज उठते,—"हाँ, मृत्यु से भी अधिक कष्टकर।"

"आखिर यह कष्ट क्यों ? और फिर उत्तर मिलता—"बस यों ही, इसके परे और कुछ नहीं।"

बीमारी के प्रारम्भ से ही, जब से डाक्टर का इलाज शुरू हुआ, इवान इलिच का जीवन दो विरोधी दिशाओं में बह रहा था। एक ओर तो निराशा एवं अज्ञात और वीभत्स मृत्यु की आशंका थी और दूसरी ओर थी निराशा के इस विस्तृत अंधकार में कभी-कभी उठने वाली आशा की एक क्षीण किरण। यों प्रायः उसके सामने गुर्दे की बीमारी की ही चिन्ता रहती, जो उसे परेशान करती या फिर भयानक मृत्यु, जिससे मुक्ति असम्भव थी।

समय के बीतने के साथ ही मृत्यु के बारे में उसकी आशंका भी बढ़ती गई। उसकी आशाओं पर तुषारपात हो गया।

भविष्य नष्ट हो चुका था। एकान्त में सोफे पर लेटे हुए अतीत के चित्र उसकी आँखों के सामने से गुजरते। वर्तमान से शुरू हो वे सदैव बहुत दूर बचपन तक चले जाते। बहुत सी बातें आईं—धाया, भाई, खिलौनें। वह यह सब भूलने का प्रयत्न करता। "नहीं, मुझे इन सबके बारे में नहीं सोचना चाहिये। यह कितना कष्टकर है।" और फिर अतीत से वर्त्तमान पर आ जाता। प्रतिदिन की आवश्यकता की छोटी-छोटी चीजें उसे परेशान करतीं। सोफे के बटन और उसकी 'क्रीज़'

के बारे में वह सोचता—"कपड़ा अच्छा है, पर इसकी तह ठीक नहीं होती। इस पर भी एक बार झगड़ा हुआ था।" और इस तरह फिर उसका ध्यान अतीत की ओर खिंच जाता।

संस्मरणों की इस श्रृंखला में विचारों का एक दूसरा क्रम उसके दिमाग में गुजरा कि आखिर किस प्रकार उसकी बीमारी बढ़ी और अधिक बिगड़ गई। जितना ही वह पीछे गया उसे जीवन की अपूर्णता का अहसास हुआ। अतीत सुखमय था, पर समय बीतने के साथ दर्द बढ़ता गया और जीवन भी कष्टमय होता गया। उसके विचार में 'अतीत में', जीवन के प्रारम्भ में, एक प्रकाशमय बिन्दु था; पश्चात्, सभी कुछ कालिमामय होता गया। उसने अपनी तुलना नीचे गिरते हुए पत्थर से की जिसकी गति क्रमशः बढ़ रही हो। अपने पतन का सारा दृश्य उसकी आँखों के सामने आगया। 'मेरी मृत्यु अवश्यंभावी है' इस विचार से ही वह लड़खड़ा गया। उसने अपने शरीर को साधा, थकी हुई आँखों से सोफे के नीचे देखा और प्रतीक्षा करने लगा—उस वीभत्स पतन और मृत्यु की प्रतीक्षा!

"मृत्यु पर विजय सम्भव नहीं। पर काश! मैं इतना समझ लेता कि इस सब कष्ट का उद्देश्य क्या है। किन्तु यह भी तो सम्भव नहीं है।" अब तो जीवन की इस सांध्य-वेला में अपने सम्पूर्ण कृत्यों का स्मरण कर वह यह देखना चाहता था कि कोई अनुचित कार्य तो नहीं हुआ। इसीलिये उसने अपने जीवन की सम्पूर्ण पवित्रता, सम्पूर्ण औचित्य का स्मरण किया। "निस्संदेह, इसमें कुछ भी अनुचित या असाधारण नहीं है।" उसने सोचा और उसके ओठों पर व्यंगपूर्ण मुस्कान खेल गई। "रोग! कष्ट!! मृत्यु!!!—पर किस लिये?"

---

[११]

इस तरह दो सप्ताह बीत गये । इन दो सप्ताहों में एक विशेष घटना हुई । प्रास्कोव्या फैडोरोवना इलिच को इस घटना की सूचना देने लिये उसके कमरे में गई, किन्तु उसी रात इलिच की दशा और भी बिगड़ गई । प्रास्कोव्या ने देखा कि वह अपनी पीठ के बल सोफे पर लेटा है । उसने इलिच को दवा का स्मरण दिलाया पर इलिच ने उसकी ओर इस तरह देखा कि वह सहम गई ।

"प्रभु ईशा के नाम पर मुझे शान्ति से मरने दो ।" उसने कहा ।

वह चली जाती, पर तभी उनकी बेटी आगई । इलिच ने इस बेटी की ओर भी उन्हीं पैनी निगाहों से देखा, जिस प्रकार कि अपनी पत्नी की ओर देखा था । उसने कहा कि अब शीघ्र ही वह सब लोगों को अपने बन्धन से मुक्त कर देगा । वे दोनों चुप रहीं और कुछ देर उसके पास बैठकर चली गईं ।

"यह क्या हमारी भूल है ?" लीसा ने अपनी माँ से कहा, "समझते हैं, मानो हमारा ही अपराध हो । मुझे पापा के लिये दुख है, पर हमें क्यों परेशान किया जाता है ?"

निश्चित समय पर डाक्टर आया । इवान इलिच ने 'हाँ' और 'ना' में उत्तर दिया और उसकी क्रोधित लाल आँखें डाक्टर पर गढ़ी रहीं । अन्त में उसने कहा:—

"आप जानते हैं कि आप मेरे लिये कुछ नहीं कर सकते; मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये ।"

"हम आपके कष्टों को कम तो कर सकते हैं ।"

"आप यह भी नहीं कर सकते ।"

डाक्टर ने ड्राइंग रूम में जाकर बताया कि 'केस' निस्संदेह गम्भीर था । हाँ, अफीम से उसके कष्टों में कुछ शान्ति मिल सकती थी ।

डाक्टर इवान इलिच के शारीरिक कष्ट का ही पता लगा सकता था, किन्तु शारीरिक से भी अधिक उसे मानसिक कष्ट था।

इसी रात को इलिच ने जैरासिम के उदासीन, स्वाभाविक चेहरे की ओर देखा और अकस्मात् सोचा—

"क्या सचमुच में मेरा सम्पूर्ण जीवन भूलों से भरा हुआ रहा है ?"

उसे अहसास हुआ कि यह बात सम्भव थी कि उसने अपना जीवन पूर्णरूपेण उसी प्रकार नहीं बिताया जैसी कि अपेक्षा थी। उन सब वस्तुओं के प्रति संघर्ष करने के उसने अनेकों प्रयत्न किये थे जिन्हें कि उच्च वर्ग के व्यक्ति अच्छा समझते थे। यौवन की अनेक उद्दाम इच्छाओं को उसने नियंत्रित किया था। यही उसके जीवन की सार्थकता थी, जब कि शेष सब निरर्थक ! व्यर्थ !! असत्य !!! उसके दिन-प्रतिदिन के व्यावसायिक कर्त्तव्य, जीवन की अन्य बातें, और पारिवारिक सम्बन्ध शायद सभी कुछ असत्य थे। अपने जीवन-काल में उसने सभी सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को संजोया था, पर अब वह उनके गर्भ में छिपी कमजोरियों को समझ रहा था।

"यदि मृत्यु ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है और इसीलिए मेरी आत्मा अब बन्धन-मुक्त होना चाहती है और इस शरीर की रक्षा करना असम्भव है तो फिर इस मृत्यु से डर क्यों ?"

वह अपनी पीठ के बल लेट गया और नये सिर से अपने जीवन पर पुनर्विचार करने लगा। प्रातःकाल उसने सबसे पहले चौकीदार को, फिर पत्नी को, पुत्री को और अन्त में डाक्टर को देखा। उनके प्रत्येक शब्द, भाव और गति ने उपरोक्त विचारों की पुष्टि की। उसने उन सब को देखा जिनके लिये वह जीवित रहा था। उसका विश्वास दृढ़ हो गया कि संसार असत्य है, एक वीभत्स प्रवचना है, जिसने जीवन और मृत्यु दोनों को समेट लिया है। इस प्रकार के विचारों से उसका कष्ट कई गुना बढ़ गया।

उसे अफीम की एक 'डोज़' दी गई और वह गहरी निन्द्रा में

सो गया। पर दोपहर के बाद उसके कष्ट फिर शुरू हो गये। वह करवटें बदलता रहा।

उसकी पत्नी ने आकर कहा—"प्रिय जीन, मेरे लिये इतना तो करो। इससे कोई हानि नहीं, कुछ लाभ ही पहुँचता है।"

"क्या...?" उसने आँखें खोलीं और कहा—"यह अनावश्यक है, तो भी..."

"हाँ, मैं पुजारी को बुला भेजूँगी; वह बहुत अच्छा आदमी है।"

"अच्छा, बहुत अच्छा।" वह बड़बड़ाया।

पुजारी आया, और फिर उसने इलिच से बहुत सी बातें कबूल-वाईं—ईश्वर को साक्षी बनाकर। इलिच हल्का हो गया। उसे अहसास हुआ कि उसे अपने कष्टों से मुक्ति मिल गई है। कुछ क्षणों के लिये आशा की किरणें उसके जीवन में चमकीं। फिर वही गुर्दे का दर्द।

जब उसे जमीन पर उतारा गया तो एक क्षण के लिये उसे कुछ राहत मिली। यह आशा कि वह अभी कुछ और जीवित रह सकता है बलवती हो गई। उसने ऑपरेशन के बारे में सोचना शुरू किया।

उसकी पत्नी उसे मिलने के लिये आई और पहले की तरह अन्यमनस्कता से उसने पूछाः—

"कुछ राहत महसूस हुई?"

"हाँ।"

उसके कपड़े, आकृति, चेहरे के भाव, आवाज की गति सब एक ही बात की ओर संकेत कर रहे थे कि कहीं भूल अवश्य ही हुई है। सब कुछ वैसा नहीं हुआ जैसा कि होना चाहिये था।

'वह सब जिसके लिए वह जीवित रहा और रह रहा है एक छल है, प्रवंचना है। जैसे ही इस विचार को वह मन में लाया उसकी पीड़ा फिर उभर आई और उसका दम घुटने लगा।

उसकी उपरोक्त 'हाँ' में एक घृणा छिपी थी, चेहरे के भाव बड़े रूखे थे। यह कहते ही बड़ी तेजी से वह बोलाः—

"चली जाओ। मुझे अकेला छोड़ दो।"

[१२]

तीन दिन तक इवान इलिच बुरी तरह कराहता रहा। दो बन्द दरवाजों के बाहर भी उसका यह कराहना बड़ा वीभत्स और भयानक लगता था। वह जानता था कि अब सब कुछ समाप्तप्रायः है और मृत्यु से जीवन की ओर वापस नहीं लौटा जा सकता। अन्त समीप था, पर उसकी शंकाओं का समाधान नहीं हो पाया था।

"आह !" वह कराहता रहा; उसका अन्तरतम दुख से तड़प रहा था। पूरे तीन दिन तक समय का उसके लिये कोई अस्तित्व न रहा। मृत्यु की छाया से आतङ्कित, काले, गहरे अन्धकार में वह किसी अदृश्य शक्ति के विरुद्ध संघर्ष करता रहा; उसी प्रकार, जैसे कि एक फाँसी की सजा पाया व्यक्ति जल्लाद के हाथों में संघर्ष करता है पर अपने सारे प्रयासों की बावजूद वह अनुभव करता है कि वह मृत्यु के निकटतर जा रहा है। केवल उसका यह विश्वास ही कि उसका जीवन पवित्र रहा है, इस मृत्यु के समीप जाने में निष्फल बाधा डाल रहा था।

अचानक सीने पर उसे धक्के का सा अहसास हुआ, यहाँ तक कि साँस लेना भी कठिन हो गया। उसे एक सनसनाहट सी हुई, जैसी कि रेलगाड़ी में बैठा कोई व्यक्ति पीछे लौटते समय अनुभव करता है जबकि वह वास्तव में सीधी दिशा में आगे की ओर बढ़ रहा हो।

"हाँ, यह सब ठीक नहीं है।" उसने सोचा, 'किन्तु इससे क्या, यह सम्भव नहीं। फिर सत्य क्या है?" स्वयं से पूछा और अकस्मात् शान्त हो गया।

तीसरे दिन उसकी मृत्यु से दो घण्टे पहले स्कूल में पढ़ने वाला उसका बेटा चुपचाप अन्दर आकर उसके बिस्तरे के पास बैठ गया।